हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 29 मार्च 2026

11 चौ. बंसीलाल और चौ. सुरेन्द्र सिंह के अधूरे सपनों को ...

12 भिवानी में तीन किसान पहुंचे सरसों बेचने बवानीखेड़ा ...

WISSEN Science Academy
9th to 12th SCHOOLING + COACHING
NEAR WARE HOUSE, M.C. COLONY, CH. DADRI Call Us : 7419519001, 02, 03

District Topper
Pure Classroom Study
PUSHKAR SANGWAN
Classroom Student
ACHIEVED 99.713%ILE in IIT-JEE MAINS 2026
9th & 11th New Batch Start 24 March, 2026
NEET | JEE | NDA | FOUNDATION
SCHOLARSHIP-CUM-ADMISSION TEST
29th March 2026, 10:00 AM
AC Class Room & Hostel Facility

खबर संक्षेप

भिवानी में आज होगा संत निरंकारी समागम

भिवानी। रामनगर स्थित पंजाबी कम्युनिटी सेंटर में रविवार 29 मार्च को संत निरंकारी मंडल द्वारा संत समागम का आयोजन करवाया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली से पधारे ज्ञान प्रचारक विद्वान महात्मा विवेक मौजी करेंगे। सन्त निरंकारी मण्डल जोन भिवानी के जोनल इंचार्ज महात्मा बलदेवराज नागपाल ने बताया कि कार्यक्रम 0:30 बजे से दोपहर एक बजे तक होगा। सत्संग समाप्ति पर लंगर प्रसाद वितरित किया जाएगा।

सिविल अस्पताल ब्लड बैंक में रक्तदान शिविर तीन को

भिवानी। सहारा चेरिटेबल ट्रस्ट व वंशिका फाउंडेशन द्वारा 3 अप्रैल शुक्रवार को चौधरी बंसीलाल सिविल अस्पताल के ब्लड बैंक में रक्तदान शिविर का आयोजन करवाया जाएगा। वंशिका फाउंडेशन के अध्यक्ष मनीष वर्मा ने बताया कि गर्मी के मौसम में ब्लड बैंकों में रक्त की मांग बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि जरूरतमंद मरीजों तक समय पर रक्त पहुंचाकर उनका जीवन बचाने के प्रयास के उद्देश्य से रक्तदान शिविर आयोजित किया जाएगा। मनीष वर्मा ने लोगों से आह्वान किया कि वे शिविर में भाग बढ़-चढ़कर भाग ले।

पिछली बकाया उगाही पर अड़ी तेल की बड़ी कम्पनियां

'कैश एंड कैरी' की पॉलिसी से उधारियों के 'पम्प हुए ड्राई'

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

अमेरिका-इजराइल व ईरान के बीच युद्ध की वजह से प्रदेश में तेल व गैस की किल्लत हो गई है। हम इसलिए कह रहे कि जो अभी तक जांच पड़ताल में सामने आया, उससे तो यही साबित हो रहा है। तेल की बड़ी तीनों कम्पनियों ने तेल की डिलीवरी देने के लिए नए नियम थोप दिए हैं। अब कम्पनी ने पेट्रोल पम्प संचालकों को 'कैश एंड कैरी' की पॉलिसी पर तेल के टैंकर देने आरंभ कर दिए। जो पम्प संचालक तेल की डिलीवरी लेते वक्त पैसे जमा करवाएगा। उसी पेट्रोल पम्प संचालक को तेल का टैंकर मिल पाएगा।

नई पॉलिसी अनेक पम्प संचालकों के लिए गले की हड्डी बन गई है। वे अभी तक एक सप्ताह की उधार पर तेल की डिलीवरी मंगवाते थे,कई बार तो वे एक माह तक तेल कम्पनी में तेल लेने के बदले पैसा जमा नहीं करवाते थे। अब नई पॉलिसी में उनको हाथोहाथ पैसे जमा करवाने पर ही तेल की डिलीवरी मिल पाएगी। जो पेट्रोल पम्प संचालक इस पॉलिसी का फोलो करेगा। उस पेट्रोल पम्प संचालक को तत्काल तेल उसी

वक्त मिल जाएगा। जो पम्प संचालक कैश एंड कैरी की पॉलिसी नहीं अपनाएगा। उस पम्प संचालक को तेल की डिलीवरी नहीं मिल पाएगी। माना जा रहा है कि इसी पॉलिसी का असर कई पेट्रोल पम्प संचालकों पर पड़ा। जिस वजह से जिले में अनेक पेट्रोल पम्प ड्राई चल रहे है। बताया जा रहा है कि जिले के कुछेक पम्प संचालकों की तरफ तेल की बड़ी कम्पनियों की बकाया राशि थी। कम्पनी ने अपनी कैश एंड कैरी की पॉलिसी के साथ साथ बकाया राशि उगाही की भी शर्त लगा दी है। जो पम्प संचालक आर्थिक रूप से सम्पन नहीं है। उनके सामने विकट स्थिति बन गई है। हालांकि पूरे देश में पीछे से कम सप्लाई पहुंच रही है,लेकिन अगर कम्पनी के बकाया पैसे या कैश एंड कैरी की पॉलिसी पर कार्य नहीं करेगी तो उस संचालक को तेल की डिलीवरी नहीं मिल पाएगी। शनिवार को जिले में डीजल व पेट्रोल तेल की भारी किल्लत रही। कुछ पम्पों पर उपभोक्ताओं को लाइनों में तेल मिला,लेकिन कुछ पेट्रोल पम्पों पर तेल नहीं मिल पाया। लोगों ने इस तरह के पम्पों की शिकायत की। उपायुक्त ने तत्काल इन पम्पों के निरीक्षण के निर्देश दिए। अधिकारियों ने निरीक्षण किया तो उन पम्पों पर तेल ही नहीं मिल पाया। अधिकारियों ने तेल की डीलीवरी के बारे में पूछा तो कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए।

तेल की कमी नहीं

जिला खाद्य एवं पूर्ति अधिकारी प्रदीप कौशिक ने बताया कि तेल की कोई कमी नहीं है। तेल का प्रर्याप्त स्टॉक है। वैसे तेल की बड़ी कम्पनियों ने डिलीवरी की नई पॉलिसी लागू की है। कैश एंड कैरी पॉलिसी के हिसाब से तेल कम्पनियां तेल की डिलीवरी दे रही हैं। कुछ पम्प संचालकों को यह पॉलिसी रास आई तो कुछ पम्प संचालक इस पॉलिसी में ढील का इंतजार कर रहे हैं। बड़ी कम्पनियों ने पैसे जमा करवाओं तेल की डिलीवरी पाओ का नियम लागू कर दिया है। जो पेट्रोल पम्प तेल की डिलीवरी नहीं लाएंगे, उनको जल्द सूचीबद किया जाएगा।

रेट बढ़ाने की अफवाह, बिना जरूरत वाले भी पहुंचे पम्पों पर

विगत में तेल कम्पनी नायरा व एक अन्य कम्प नी ने अपने पम्पों पर डीजल व पेट्रोल के रेटों में बढ़ोतरी कर दी थी। उस वजह से कई पम्प संचालकों ने तेल का स्टाक रखने का प्रयास किया और दूसरी तरफ इस अफवाह के बाद अनेक लोग पम्पों पर तेल खरीदने के लिए पहुंच गए। वे लोग भी पहुंच गए,जिनको अब जरूरत भी नहीं थी।

लकड़ियों में भरी पिकअप से टकराई मोटरसाइकिल, चालक की मौत

गांव फरटिया केहर के पास सड़क के बीचों-बीच खड़ी थी लकड़ियों से भरी पिकअप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| लोहारू

लोहारू सतनाली सड़क मार्ग पर गांव फरटिया केहर के पास सडक़ के बीचों बीच लकड़ियों से भरी पिकअप गाड़ी में टकराने से बाइक सवार युवक की दर्दनाक मौत हो गई। मृतक युवक के पिता की शिकायत पर लोहारू थाना पुलिस ने अज्ञात पिकअप चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दिए बयान में बवानी खेड़ा निवासी महेंद्र सिंह ने बताया कि वह दो वर्षों से अपने परिवार के साथ गांव ढाणी ढोला में रह रहा है। उसकी पुत्रवधु ज्योति भिवानी के अस्पताल में उपचाराधीन थी तथा उसका पुत्र मोटरसाइकिल पर सवार होकर बीती देर सांच भिवानी जा रहा था। इस दौरान फरटिया केहर के पास अज्ञात चालक अपनी लकड़ियों से भरी पिकअप गाड़ी को सडक़ के बीच खड़ी करके चला गया तथा अंधेरा होने के कारण विकास की मोटरसाइकिल पिकअप गाड़ी से जा टकराई और हादसे में उसके बेटे विकास की दर्दनाक मौत हो गई। घटना की सूचना के बाद लोहारू थाना पुलिस टीम भी मौके पर पहुंच गई और शव को पोस्टमार्टम के लिए लोहारू सीएचसी में दाखिल कराया।

सड़क दुर्घटना में युवक की मौत, दो अन्य घायल

तोशाम। गांव सिढ़ाण में सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई, जबकि दो अन्य घायल हो गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार 26 मार्च की रात करीब 8:30 बजे गांव सिढाण निवासी तीन युवक सड़क से नीचे खेत में बैठे बातचीत कर रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार और लापरवाही से आ रही बाइक ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में मोनू, सोमवीर और एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। तीनों को परिजन व ग्रामीण तुरंत उपचार के लिए निजी अस्पताल हिसार ले गए। इलाज के दौरान मोनू की मौत हो गई, जबकि अन्य घायलों का इलाज जारी है। मृतक मोनू के शव का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस ने घायल सोमबीर की शिकायत पर अज्ञात चालक के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ST. XAVIER'S HIGH SCHOOL
EDUCATION FOR ALL
ST. XAVIER'S SCHOOL
A COMMITMENT FOR EDUCATIONAL EXCELLENCE
Science • Arts • Commerce
www.stxaviersbhiwani.in
SOUTH INDIAN'S PREMIER INSTITUTION IN BHIWANI
ADMISSION OPEN
Nursery to IX & XI
2026-2027
CBSE AFFILIATION NO 531632
FOR STRONG ACADEMIC FOUNDATION
Xavier's Sports & Cultural Club
Music, Dance, Yoga, FineArts
Basketball, Volleyball, Football, Badminton, LawnTennis, Table Tennis, Skating, Cricket, Archery, Karate, Kho-Kho, Carrom, Chess & many more
JOIN NCC
UNITY & DISCIPLINE
FRENCH LANGUAGE
A PREMIUM AIR-CONDITIONED SCHOOL
FOUNDATION CLASSES
JEE | NEET | CA-CPT | CLAT | NDA | OLYMPIADS
Transport Facility Available for All Nearby Areas Upto 40 KM
5 KM, MILESTONE, DELHI-BHIWANI HIGHWAY, OPP. M.K. HOSPITAL, BHIWANI (HARYANA)
86850 12121, 74197 44482

सिप+हिप+ टिप पैसा बनाने के साथ देते हैं लाइफ और सुरक्षा

सुझाव | बिजनेस डेस्क

आज के समय में केवल कमाई करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस कमाई को सही दिशा में लगाना, सुरक्षित रखना और भविष्य के लिए बढ़ाना भी उतना ही जरूरी हो गया है। महंगाई, बढ़ते मेडिकल खर्च और जीवन की अनिश्चितताओं के बीच एक संतुलित वित्तीय योजना ही आपको मजबूत बना सकती है। यही कारण है कि 2026 में सिप, हिप और टिप का कॉम्बिनेशन स्मार्ट निवेशकों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यह तीनों मिलकर आपकी वेल्थ, हेल्थ और सिक्योरिटी तीनों को संतुलित करते हैं। इसलिए निवेशक इन्हें अपनाकर अपना भविष्य सरक्षित कर सकते हैं।

क्यों जरूरी है तीनों का कॉम्बो?

- आज की आर्थिक परिस्थितियों में एक ही विकल्प पर निर्भर रहना जोखिम भरा हो सकता है।
- महंगाई लगातार बढ़ रही है
- हेल्थकेयर खर्च तेजी से बढ़ रहे हैं
- जीवन में अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है
- ऐसे में एक ऐसा प्लान जरूरी है, जो हर स्थिति में आपका साथ दे। सिप, हिप और टिप का कॉम्बो आपकी आय को बढ़ाने, बचाने और सुरक्षित रखने का संतुलन बनाता है। यही एक समझदार निवेशक की पहचान भी है।

सिपः छोटे निवेश से बड़ा फंड का फॉर्मूला

सिटेमैटिक प्लान यानी सिप हर महीने थोड़ी-थोड़ी रकम निवेश करने की रणनीति, जो समय के साथ बड़ा फंड तैयार करती है। इसमें आप 500 रुपये, 1000 रुपये या 5000 रुपये जैसी छोटी रकम से भी शुरुआत कर सकते हैं। सबसे बड़ी ताकत है "कंपाउंडिंग" यानी आपके पैसे पर भी पैसा बनना।

- लंबी अवधि में 10–12% तक रिटर्न की संभावना
- मार्केट के उतार-चढ़ाव का औसत असर
- अनुशासित निवेश की आदत
- जितना लंबा समय, उतना बड़ा फंड यही सिप की खासियत है। इसलिए इसे लॉन्ग टर्म वेल्थ क्रिएशन का सबसे भरोसेमंद तरीका माना जाता है।

हिप : आपकी सेविंग्स का बॉडीगार्ड

हेल्थ इंश्योरेंस प्लान यानी हिप को अक्सर लोग खर्च समझ लेते हैं, जबकि असल में यह आपकी बचत की सुरक्षा करता है। आज के दौर में एक गंभीर बीमारी या मेडिकल इमरजेंसी कुछ ही दिनों में लाखों रुपये खर्च करा सकती है। ऐसे में अगर आपके पास हेल्थ इंश्योरेंस नहीं है, तो आपकी सालों की जमा पूंजी खत्म हो सकती है। ऐसे में हेल्थ इंश्योरेंस आपकी संभाल करता है। इसलिए इसे लेना न भूलें। से अपातकालीन हालात में आपकी रक्षा करता है।

- अस्पताल का खर्च बीमा कंपनी उठाती है
- आपकी सेविंग्स और निवेश सुरक्षित रहते हैं
- मानसिक तनाव कम होता है
- विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर व्यक्ति को अपनी सालाना आय के कम से कम 50% के बराबर हेल्थ कवर जरूर लेना चाहिए। यानी अगर आपकी सालाना आय 10 लाख रुपये है, तो कम से कम 5 लाख का हेल्थ इंश्योरेंस होना चाहिए।

टिप : परिवार की आर्थिक सुरक्षा की ढाल

- टर्म इंश्योरेंश प्लान यानी आपके परिवार के लिए सबसे मजबूत वित्तीय सुरक्षा कवच माना जाता है। जीवन अनिश्चित है, और अगर कमाने वाले व्यक्ति के साथ कुछ अनहोनी हो जाए, तो परिवार पर आर्थिक संकट आ सकता है। ऐसे में टर्म इंश्योरेंस परिवार को आर्थिक सहारा देता है।
- कम प्रीमियम में बड़ा कवरेज
- परिवार के खर्च, बच्चों की पढ़ाई व लोन की सुरक्षा
- लंबी अवधि के लिए मानसिक शांति
- उदाहरण के तौर पर, 30 साल की उम्र में करीब 1 करोड़ रुपये का टर्म प्लान सालाना 10,000–12,000 रुपये में मिल सकता है। यह छोटी सी लागत आपके परिवार के भविष्य को सुरक्षित करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है।

तीनों का संतुलन ही असली प्लानिंग

सिप, हिप और टिप तीनों अलग-अलग जरूरतों को पूरा करते हैं, लेकिन जब इन्हें एक साथ अपनाया जाता है, तो यह एक मजबूत वित्तीय ढांचा तैयार करते हैं।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

निवेशकों के बीच असमंजस और चिंता का माहौल, कई लोग बाजार की गिरावट देखकर जल्दबाजी में अपने निवेश को निकालने का कर रहे विचार

विशेषज्ञों की सलाह : हड़बड़ाहट में पैसा न निकालें, निवेश बनाएं रखें, एसआईपी में बढ़ा सकते हैं निवेश

बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच शांति व धैर्य जरूरी

ऐसे समय में धैर्य खोना निवेशकों के लिए नुकसान का कारण बन सकता है। इसलिए संयम से काम लें और निवेश बनाएं रखें। लंबी अवधि में निवेश आपको फायदा देकर ही जाएगा।

वैश्विक स्तर पर बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव खासतौर पर अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच जारी टकराव का असर अब दुनियाभर के शेयर बाजारों पर साफ नजर आने लगा है। लगातार हो रहे उतार-चढ़ाव के कारण निवेशकों के बीच असमंजस और चिंता का माहौल है। कई लोग बाजार की गिरावट देखकर जल्दबाजी में अपने निवेश को निकालने का विचार कर रहे हैं। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे समय में घबराने की बजाय संयम और समझदारी से काम लेना ही सबसे बेहतर रणनीति होती है। उन्होंने कहा कि भारतीय बाजार के फंडामेंटल्स मजबूत हैं और लंबी अवधि के निवेशकों को आगे चलकर इसका फायदा मिल सकता है। निवेशक चाहें तो एसआईपी में निवेश बढ़ा सकते हैं, चूंकि लंबी अवधि में इसका लाभ मिलेगा। यह गिरावट कुछ समय के लिए हो सकती है। इसलिए लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर शांति और धैर्य के साथ निवेश करते जाएं। बाजार के जानकारों ने निवेशकों को स्पष्ट संदेश दिया है कि बाजार में गिरावट के दौरान जल्दबाजी में शेयर बेचना नुकसानदेह हो सकता है। उनका कहना है कि वर्तमान में जो उतार-चढ़ाव दिखाई दे रहा है, वह केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक ट्रेंड है। दुनिया के कई बड़े बाजारों में 7% से 10% तक की गिरावट देखी जा रही है, जो असामान्य नहीं बल्कि बाजार की सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा है। शेयर बाजार हमेशा सीधी रेखा में नहीं चलता। इसमें उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, और यही इसकी प्रकृति है।

लंबी अवधि का नजरिया सफलता की कुंजी

विशेषज्ञों का मानना है कि शेयर बाजार में सफलता का सबसे बड़ा मंत्र है। लंबी अवधि का नजरिया। जब कोई निवेशक किसी कंपनी के शेयर खरीदता है, तो वह उस कंपनी के भविष्य में निवेश कर रहा होता है। ऐसे में रोजाना के उतार-चढ़ाव पर ध्यान देना जरूरी नहीं होता। अगर निवेशक 5 से 10 साल के दृष्टिकोण से निवेश करते हैं, तो बाजार के अस्थायी उतार-चढ़ाव का असर कम हो जाता है और बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है। इतिहास भी यही बताता है कि लंबे समय तक बाजार में बने रहने वाले निवेशकों को अक्सर अच्छा लाभ मिला है।

भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत

- भले ही बाजार में अल्पकालिक गिरावट देखने को मिल रही हो, लेकिन भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत बनी हुई है।
- देश की जीडीपी ग्रोथ दर स्थिर और सकारात्मक बनी हुई है
- महंगाई नियंत्रण में है, औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हो रही है
- बिजली खपत और इंफ्रास्ट्रक्चर गतिविधियों में तेजी है
- ये सभी संकेत बताते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार मजबूत है। यही कारण है कि लंबे समय में बाजार की दिशा सकारात्मक रहने की उम्मीद की जाती है।
- भारत का शेयर बाजार भी लगातार विस्तार कर रहा है। निवेशकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और नए आईपीओ की भरमार इस बात का संकेत है कि बाजार पर लोगों का भरोसा कायम है।

एसआईपी से अस्थिरता में अवसर

- बाजार की गिरावट को अक्सर लोग नकारात्मक रूप में देखते हैं, लेकिन समझदार निवेशक इसे अवसर के रूप में भी देखते हैं।
- सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश करने वालों के लिए यह समय और भी फायदेमंद हो सकता है।
- गिरावट के समय कम कीमत पर यूनिट्स मिलती हैं
- औसत लागत कम होती है
- लंबे समय में बेहतर रिटर्न की संभावना बढ़ती है
- विशेषज्ञों का मानना है कि जो निवेशक अपनी एसआईपी को जारी रखते हैं या उसमें बढ़ोतरी करते हैं, वे बाजार की अस्थिरता का लाभ उठा सकते हैं।

धैर्य और अनुशासन ही निवेश की असली ताकत

- शेयर बाजार में सफल होने के लिए केवल सही स्टॉक चुनना ही काफी नहीं होता, बल्कि सही व्यवहार और मानसिकता भी जरूरी होती है।
- हर गिरावट पर घबराना नुकसानदायक हो सकता है
- बार-बार खरीद-बिक्री से लागत बढ़ती है
- भावनात्मक फैसले अक्सर गलत साबित होते हैं
- इसलिए निवेशकों को चाहिए कि वे अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार योजना बनाएं और उसी पर टिके रहें।
- धैर्य और अनुशासन ही वे दो गुण हैं, जो लंबे समय में निवेशकों को सफलता दिलाते हैं।

वैश्विक संकट का असर

- वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर अनिश्चितता का माहौल है। युद्ध, आर्थिक नीतियों में बदलाव और अन्य अंतरराष्ट्रीय घटनाएं बाजार को प्रभावित करती हैं, लेकिन यह भी सच है कि बाजार इन परिस्थितियों से उबरने की क्षमता रखता है। इतिहास गवाह है कि हर बड़े संकट के बाद बाजार ने वापसी की है और नए उच्च स्तर भी हासिल किए हैं। ऐसे में निवेशकों को यह समझना जरूरी है कि मौजूदा गिरावट स्थायी नहीं है।

संयम रखें, रणनीति पर टिके रहें

- बाजार में उतार-चढ़ाव निवेश का स्वाभाविक हिस्सा है
- घबराकर निवेश निकालना अक्सर नुकसानदायक होता है
- लंबी अवधि का नजरिया और अनुशासन जरूरी है
- एसआईपी जैसे विकल्प अस्थिरता में भी अवसर देते हैं
- निवेश एक लंबी यात्रा है, जिसमें धैर्य और समझदारी सबसे बड़े साथी होते हैं। मौजूदा परिस्थितियों में घबराने के बजाय शांत रहकर अपनी रणनीति पर टिके रहना ही सही निर्णय साबित हो सकता है।

टैक्स बचाने और बचत सुरक्षित रखने की यह है मास्टर प्लानिंग

एजुकेशन लोन अब बोझ नहीं बन सकेगा स्मार्ट इन्वेस्टमेंट

जानकारी | बिजनेस डेस्क

"अगली बार जब एजुकेशन लोन लेने का विचार आए, तो इसे बोझ नहीं, बल्कि अपने उज्जवल भविष्य में किया गया एक समझदारी भरा निवेश मानें।

आज के समय में उच्च शिक्षा का खर्च लगातार बढ़ रहा है। इंजीनियरिंग, मेडिकल, मैनेजमेंट या विदेश में पढ़ाई हर क्षेत्र में फीस लाखों से लेकर करोड़ों तक पहुंच चुकी है। ऐसे में अधिकांश छात्र और अभिभावक एजुकेशन लोन को एक मजबूरी या बोझ के रूप में देखते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों की मानें, तो सही योजना और समझदारी के साथ लिया गया एजुकेशन लोन एक लायबिलिटी नहीं, बल्कि एक मजबूत निवेश साबित हो सकता है, जो आपके भविष्य को आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाने में मदद करता है।

एजुकेशन लोन का सबसे बड़ा फायदा टैक्स बचत के रूप में मिलता है। इनकम टैक्स एक्ट की धारा सेक्शन 80ई के तहत, लोन पर चुकाए गए ब्याज पर पूरी तरह टैक्स छूट मिलती है। इसका मतलब यह है कि आप जितना ब्याज चुकाते हैं, उतनी ही आपकी टैक्सेबल इनकम कम हो जाती है। खास बात यह है कि इस छूट की कोई ऊपरी सीमा नहीं होती। यह सुविधा लोन चुकाना शुरू करने के बाद अधिकतम 8 वर्षों तक मिलती है।यानी आप पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी शुरू करते ही टैक्स बचत का लाभ उठा सकते हैं, जिससे आपकी कुल वित्तीय योजना और मजबूत हो जाती है।

आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास

एजुकेशन लोन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह छात्रों को आत्मनिर्भर बनाता है। जब छात्र अपनी पढ़ाई का खर्च खुद उठाते हैं, तो उनमें जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। वे अपने करियर को लेकर अधिक गंभीर होते हैं और नौकरी मिलने के बाद अपने वित्तीय लक्ष्यों को लेकर सजग रहते हैं। यह अनुभव उन्हें जीवनभर काम आता है और आर्थिक रूप से मजबूत बनाता है।

समझदारी से लिया गया कर्ज, भविष्य की ताकत

एजुकेशन लोन को केवल कर्ज के रूप में देखना एक अधूरी सोच है। सही रणनीति के साथ यह एक ऐसा वित्तीय टूल बन सकता है, जो न केवल आपकी शिक्षा का रास्ता आसान करता है, बल्कि टैक्स बचत, क्रेडिट स्कोर सुधार और निवेश सुरक्षा के जरिए आपके भविष्य को भी मजबूत बनाता है।

क्रेडिट स्कोरः मजबूत आर्थिक पहचान की शुरुआत

युवाओं के लिए एजुकेशन लोन सिर्फ पढ़ाई का जरिया नहीं, बल्कि उनके वित्तीय जीवन की पहली सीढ़ी भी होता है। जब कोई छात्र समय पर अपनी ईएमआई भरता है, तो उसका क्रेडिट स्कोर मजबूत होता है। यह स्कोर भविष्य में होम लोन, कार लोन या बिजनेस लोन लेने में बेहद अहम भूमिका निभाता है। अच्छा क्रेडिट स्कोर होने से न केवल आसानी से लोन मिलता है, बल्कि कम ब्याज दर पर भी लोन मिल सकता है। इसके अलावा, खुद की पढ़ाई का खर्च उठाने से छात्रों में जिम्मेदारी और वित्तीय अनुशासन विकसित होता है, जो लंबे समय में उनके करियर और जीवन दोनों के लिए फायदेमंद साबित होता है।

निवेश की सुरक्षाः बचत को बढ़ने का मौका

अक्सर देखा जाता है कि माता-पिता बच्चों की पढ़ाई के लिए अपनी जीवनभर की बचत—जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी), पीएफ या रिटायरमेंट फंड तोड़ देते हैं। यह निर्णय भावनात्मक रूप से सही लग सकता है, लेकिन वित्तीय दृष्टि से हमेशा लाभकारी नहीं होता। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इन बचतों को बाजार में निवेशित रहने दिया जाए, तो वे 12% से 15% तक का रिटर्न दे सकती हैं। वहीं, एजुकेशन लोन की ब्याज दरें अपेक्षाकृत कम होती हैं और कई मामलों में सरकारी सब्सिडी भी मिलती है। इस तरह लोन लेकर आप अपनी पूंजी को सुरक्षित रखते हुए उसे कंपाउंडिंग के जरिए बढ़ने का मौका देते हैं। यह रणनीति लंबे समय में अधिक लाभदायक साबित हो सकती है।

सही योजना जरूरी

- लोन लेने से पहले कोर्स और उसके करियर स्कोप का आकलन करें
- ब्याज दर और शर्तों की तुलना करें
- समय पर ईएमआई चुकाने की योजना बनाएं
- अनावश्यक रूप से अधिक कर्ज लेने से बचें

रिटायरमेंट के करीब हैं तो कर लें ये जरूरी काम

हर व्यक्ति की ख्वाहिश होती है कि वह रिटायरमेंट के बाद की जिंदगी बिना तनाव और आर्थिक चिंता के सुकून से बिताए। लेकिन यह तभी संभव है, जब समय रहते सही वित्तीय योजना बनाई जाए। अक्सर लोग नौकरी के दौरान तो बचत और निवेश करते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के बिल्कुल करीब आकर कई जरूरी पहलुओं को नजरअंदाज कर देते हैं। अगर आपकी रिटायरमेंट अब ज्यादा दूर नहीं है, तो यह समय बेहद अहम है। इस दौरान लिए गए सही फैसले आपके आने वाले जीवन को सुरक्षित और संतुलित बना सकते हैं। आइए जानते हैं ऐसे 5 जरूरी वित्तीय काम, जिन्हें रिटायरमेंट से पहले जरूर पूरा कर लेना चाहिए।

1. कुल बचत और आय का सही आकलन करें

रिटायरमेंट के करीब पहुंचते ही सबसे पहले अपनी वित्तीय स्थिति का स्पष्ट आकलन करना जरूरी है। इसमें आपकी सेविंग्स, पेंशन, पीएफ, ग्रेच्युटी और अन्य निवेश शामिल होने चाहिए। इसके साथ ही पिछले कुछ वर्षों के खर्च का विश्लेषण करें और यह समझें कि रिटायरमेंट के बाद आपकी मासिक जरूरतें कितनी होंगी। महंगाई को ध्यान में रखते हुए भविष्य के खर्च का अनुमान लगाना भी बेहद जरूरी है।

2. गैर-जरूरी खर्चों पर लगाएं लगाम

रिटायरमेंट के बाद नियमित आय सीमित हो जाती है, इसलिए खर्चों पर नियंत्रण बेहद जरूरी हो जाता है। ऐसे में अपनी वर्तमान जीवनशैली का मूल्यांकन करें और फिजूल खर्चों को कम करने की आदत डालें। इसके अलावा, रिटायरमेंट के बाद नए कर्ज लेने से बचें। क्रेडिट कार्ड का अत्यधिक उपयोग भी भविष्य में आर्थिक दबाव बढ़ा सकता है। बेहतर होगा कि आप अपने सभी पुराने कर्ज समय रहते खत्म कर लें, ताकि रिटायरमेंट के बाद किसी तरह की वित्तीय बाधा न आए।

3. निवेश को विविध बनाएं

एक ही जगह निवेश करना हमेशा जोखिम भरा होता है। इसलिए अपनी बचत को अलग-अलग निवेश विकल्पों में बांटना समझदारी भरा कदम है। रिटायरमेंट से पहले आप अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करें और जरूरत के अनुसार बदलाव करें। सुरक्षित विकल्पों जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट, पेंशन स्कीम या सीनियर सिटिजन सेविंग्स स्कीम में निवेश बढ़ाया जा सकता है, जबकि कुछ हिस्सा ऐसे निवेश में रखें जो महंगाई को मात दे सके। विविध निवेश से जोखिम कम होता है और रिटर्न संतुलित रहता है।

4. हेल्थ प्लान और मेडिकल फंड तैयार रखें

रिटायरमेंट के बाद स्वास्थ्य सबसे बड़ी प्राथमिकता बन जाता है। उम्र बढ़ने के साथ मेडिकल खर्च भी तेजी से बढ़ते हैं, इसलिए एक मजबूत हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी होना बेहद जरूरी है। यदि आपके पास पहले से हेल्थ इंश्योरेंस है, तो उसकी कवरेज की समीक्षा करें और जरूरत के अनुसार बढ़ाएं। इसके साथ ही एक अलग इमरजेंसी मेडिकल फंड बनाना भी समझदारी है, ताकि अचानक आने वाले खर्चों से आपकी बचत पर ज्यादा असर न पड़े।

5. पैसे निकालने की रणनीति बनाएं

रिटायरमेंट के बाद सबसे बड़ी चुनौती होती है। बचत को लंबे समय तक कैसे चलाया जाए। इसके लिए पहले से ही एक स्पष्ट रणनीति बनाना जरूरी है। आपको यह तय करना चाहिए कि हर महीने कितनी राशि निकालनी है, किन निवेशों से पैसे निकालने हैं और किन्हें लंबे समय तक बने रहने देना है। सिस्टमेटिक विड्रॉल प्लान जैसे विकल्प इस मामले में मददगार हो सकते हैं। सही योजना के साथ आप अपने फंड को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं और नियमित आय का प्रवाह बनाए रख सकते हैं।

उठापटक वाले बाजार में मल्टी एसेट फंड है बेहतर विकल्प

एक ही एसआईपी से स्टॉक्स, गोल्ड व बॉन्ड में निवेश

वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थितियों में अमेरिका-इजराइल-ईरान संघर्ष, वैश्विक महंगाई का दबाव और राजनीतिक अनिश्चितता शामिल हैं। इनको देखते हुए निवेशकों को मल्टी-एसेट रणनीति अपनानी चाहिए। । ऐसे माहौल में मल्टी-एसेट फंड निवेशकों के लिए एक आदर्श विकल्प बन जाते हैं, क्योंकि ये इक्विटी, डेट, कमोडिटी और कीमती धातुओं में निवेश का अवसर देते हैं। मल्टी-एसेट फंड ऑटोमैटिक रीबैलेंसिंग, प्रोफेशनल मैनेजमेंट और डायनेमिक एसेट एलोकेशन प्रदान करते हैं, जो खासतौर पर अधिक अस्थिरता के समय में उपयोगी होता है। साथ ही यह समय अत्यधिक आक्रामक होने का नहीं है, बल्कि एक संतुलित और विविधीकृत पोर्टफोलियो बनाए रखने का है, जो झटकों को सह सके और संभावित बढ़त में भी भाग ले सके।

पश्चिम एशिया में जारी जंग को एक माह हो गया है। इस दौरान बाजार में उठा-पटक जोरदार है। तेल की कीमतें आसमान छू रही हैं। बाजार दवाब में हैं। सोना और चांदी पहले चमके, फिर गिरे। बॉन्ड्स ने कुछ राहत दी है और जो निवेशक सिर्फ एक जगह पैसा लगाए बैठे थे, वो सबसे ज्यादा नुकसान में हैं। यही वो वक्त है जब एक पुरानी बात फिर साबित होती है कि किसी एक एसेट पर निर्भर नहीं रहना चाहिए फिर चाहे वो इक्विटी हो, डेट हो या सोना, लेकिन एक व्यक्ति कहां-कहां निवेश करे? आम निवेशक के पास क्या विकल्प हैं? इसलिए एक ऐसा निवेश का ऑप्शन आपकी सभी जरूरतों को पूरा कर सकता है। आप बस हर महीने पैसा डालते रहो और आपका पैसा हर जगह निवेश होता रहेगा। फिर शेयर हो या सोना। एसेट अलोकेशन का मतलब होता है कि आप अपना पैसा कहां-कहां डाल रहे हैं और इसका सबसे आसान रास्ता है मल्टी एसेट्स एलोकेशन फंड। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थितियों, राजनीतिक अनिश्चितता और वैश्विक महंगाई के दबाव को देखते हुए निवेशकों को मल्टी-एसेट रणनीति को प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि विविधीकरण (डाइवर्सिफिकेशन) अशांत समय में जोखिम को कम करने में मदद करता है।

केवल फंड स्तर पर विविधीकरण सही नहीं

विशेषज्ञों के अनुसार पिछले दिनों वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और केंद्रीय बैंकों की खरीदारी के कारण सोने की कीमतों में तेजी आई है। चांदी को औद्योगिक मांग और कीमती धातु के रूप में उसकी पारंपरिक भूमिका दोनों का लाभ मिला है, जबकि इक्विटी बाजार उच्च विदेशी निवेश (एफआईआई इनफ्लो), मजबूत आय संभावनाओं और मैक्रो स्थिरता के कारण अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया। इन सकारात्मक रुझानों के कारण इस श्रेणी ने निवेशकों को आकर्षित किया। लेकिन, अब हालात बदल चुके हैं। सोना और चांदी अपने उच्चतम स्तर से काफी नीचे आ चुके हैं। ऐसे में एक ही श्रेणी के निवेशक काफी दिक्कत में आ चुके हैं। इसके लिए अगर आपने अलग-अलग एसेट में निवेश किया होता तो बेहतर रहता। हालांकि, यह ध्यान रखना चाहिए कि केवल फंड स्तर पर विविधीकरण करना सही नहीं है, क्योंकि जरूरत पड़ने पर विभिन्न एसेट क्लास के बीच पुनः आवंटन करना मुश्किल हो जाता है। विशेषज्ञ बताते हैं कि 29 मल्टी-एसेट फंड्स में से अधिकांश फंड्स में 65% से अधिक निवेश इक्विटी में, 25% डेट में और 10% अन्य (जैसे सोना/कमोडिटी) में होता है। डीएसपी मल्टी एसेट एलोकेशन फंड एक अपवाद है, जिसमें लगभग 88% निवेश 'अन्य' श्रेणी में है। अधिकांश योजनाओं में एक जैसी संरचना होने से विविधीकरण और लचीलापन दोनों सीमित हो जाते हैं। चूंकि इक्विटी हिस्सा अक्सर लार्ज-कैप शेयरों में केंद्रित होता है, इसलिए कई बार ऐसे फंड्स में निवेश करने पर भी पर्याप्त विविधीकरण नहीं मिल पाता। वे सलाह देते हैं कि सिर्फ मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स पर निर्भर रहने के बजाय निवेशकों को अपने पूरे पोर्टफोलियो स्तर पर एसेट एलोकेशन तय करना चाहिए।

फ्लेक्सी-कैप और बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स भी विकल्प

इसके बावजूद मल्टी-एसेट फंड्स में निवेशकों की रुचि लगातार बढ़ रही है। मध्यम जोखिम प्रोफाइल वाले नए निवेशकों के लिए मल्टी-एसेट फंड्स के साथ फ्लेक्सी-कैप और बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स भी एक अच्छा विकल्प है। पिछले एक वर्ष में 24 मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स में से 8 ने दो अंकों (डबल डिजिट) का रिटर्न दिया, 14 ने एक अंक (सिंगल डिजिट) का रिटर्न दिया, जबकि 2 फंड्स ने नकारात्मक रिटर्न दिया। कई बार मल्टी-एसेट फंड्स पूर्व-निर्धारित एलोकेशन संरचना के कारण हर एसेट की पूरी क्षमता का लाभ नहीं उठा पाते। ये फंड्स अभी भी इक्विटी पर अधिक निर्भर रहते हैं और इक्विटी फंड्स से बहुत अलग नहीं हैं। यदि निवेशक पहले से ही अपने पोर्टफोलियो स्तर पर एसेट मिक्स तय कर रहे हैं, तो मल्टी-एसेट फंड जोड़ने से अनावश्यक दोहराव या एक ही एसेट में अधिक निवेश (कंसंट्रेशन) हो सकता है, खासकर जब फंड इक्विटी की ओर झुका हुआ हो। ऐसे निवेशकों को मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स से बचने पर विचार करना चाहिए और अपनी वित्तीय लक्ष्यों और जोखिम प्रोफाइल के अनुसार इक्विटी और डेट में अलग-अलग निवेश करना चाहिए। इससे बेहतर रिटर्न, दीर्घकालिक वृद्धि और संपत्ति निर्माण की आदर्श रणनीति बन सकती है। जबकि नए व आम निवेशकों के लिए मल्टी एसेट फंड एक बेहतर विकल्प रहता है। भले ही कुछ परिस्थितयों में इसमें रिटर्न कम हो सकता है, लेकिन जोखिम घटाने के लिए यह बेहतर विकल्प है। हाल के आंकड़े गवाह हैं कि इस फंड ने अनेक मामलों में बेहतर रिटर्न भी दिया है। इसके बावजूद निवेश हमेशा अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय लक्ष्यों के आधार पर ही करना चाहिए।

कैबिनेट मंत्री श्रुति चौधरी ने गांव गोलागढ़ में समाधि स्थल पर किए पुष्प अर्पित

चौ. बंसीलाल और चौ. सुरेन्द्र सिंह के अधूरे सपनों को हर हाल में पूरा किया जाएगा: श्रुति

कैबिनेट मंत्री ने हलका तोशाम को दी करोड़ों रुपये की सौगात, कैरू और तोशाम ब्लॉक में किया विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास

हरिभूमि न्यूज ▶▶ तोशाम

महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रुति चौधरी शनिवार को गोलागढ़ पहुंची। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री स्व. बंसीलाल की पुण्यतिथि पर उनके समाधि स्थल पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। उन्होंने कहा कि चौ. बंसीलाल और चौ. सुरेन्द्र सिंह के अधूरे सपनों को हर हाल में पूरा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि चौ. बंसीलाल हरियाणा के निर्माता रहे हैं। उनके नक्शे कदम पर ही चौ. सुरेंद्र सिंह की दूरदर्शी एवं विकासपरक सोच रही। श्रुति चौधरी ने कहा कि मुख्य मंत्री नायब सिंह सैनी ने तोशाम में आईएमटी देकर तोशाम को बहुत बड़ी सौगात दी है। वहीं दूसरी ओर श्रुति चौधरी ने कैरू और तोशाम में करोड़ों रुपये की लागत की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन किया। उन्होंने 31 मार्च को तोशाम में पहुंचे का आह्वान किया।

तोशाम। पूर्व मुख्यमंत्री स्व. बंसीलाल की पुण्यतिथि पर उनके समाधि स्थल पर पुष्प अर्पित करते हुए। फोटो :हरिभूमि

तोशाम। विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास करते हुए। फोटो : हरिभूमि

चरखी दादरी। पूर्व मुख्यमंत्री स्व. चौधरी बंसीलाल को श्रद्धांजलि देते समर्थक। फोटो : हरिभूमि

नहरों व सड़कों का जाल बिछाया

कैबिनेट मंत्री श्रुति चौधरी ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री स्व. बंसीलाल ने पूरे प्रदेश में समान रूप से विकास कार्य करवाए। उन्होंने प्रदेशभर में नहरों व सड़कों का जाल बिछाया। उन्होंने कहा कि 1970 में चौधरी बंसीलाल ने लिफ्ट ईरीगेशन सिस्टम लागू किया था जिससे रेतीले इलाकों में फसल लहला रही है। उन्होंने कहा कि तोशाम में 31 मार्च से एक अप्रैल तक आयोजित होने वाला उन्नत सिंचाई कार्यक्रम भी चौ. बंसीलाल व चौ. सुरेंद्र सिंह की किसानों को खुशहाल बनाने की सोच पर आधारित है। इस दौरान विशाल प्रदर्शनी लगाई जाएगी, जिसमें देशभर की नामी लगभग 100 कंपनियों द्वारा ड्रिप ईरीगेशन पर स्टॉल लगाकर उपकरणों व सूक्ष्म सिंचाई के बारे में किसानों को जागरूक करेंगी। उन्होंने कैरू और तोशाम में लोगों को 31 मार्च को उन्नत सिंचाई कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का आह्वान किया।

रेतीले टीबे होंगे हरे-भरे

31 मार्च को तोशाम में आयोजित होने वाले उन्नत सिंचाई उत्सव कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हो रहे हैं। श्रुति चौधरी ने कहा कि मुख्यमंत्री माइक्रो इरिगेशन सिस्टम की तोशाम से शुरुआत करते हुए अमेरिका की तर्ज पर दक्षिणी हरियाणा के रेतीले टिब्बों में पहुंचा कर हरा -भरा करने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री बिना भेदभाव के विकास कार्य करवा रहे हैं।

हलके को करोड़ों की सौगात

शनिवार को हलका तोशाम में कार्यक्रम के दौरान श्रुति चौधरी गोलागढ़ के बाद कैरू स्थित विकास एवं पंचायत अधिकारी कार्यालय परिसर पहुंची। यहां पर उन्होंने 204.90 लाख रुपये की सिंचाई विभाग की परियोजनाएं, जिसमें चौधरी बंसीलाल चैनल पंप हाउस नंबर 3, पंप हाउस नंबर 4 और पंप हाउस नंबर 5 के नवीनीकरण कार्य का उद्घाटन किया। जनस्वास्थ अभियांत्रिकी विभाग की लगभग 102 लाख रुपये के विकास कार्य जनता को सौंपे। उन्होंने कैरू ब्लॉक में पंचायत विभाग द्वारा 21 गांवों में लगभग 32 करोड़ रुपये रुपये की धनराशि की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किया। एमजीवीवाई, एचआरडीएफ,डिस्टेंशनग्रांट, एमपी लैंड, डीप्लान, और वीएएनजीवाई स्कीमों के तहत 21 गांवों में मानगढ़, ढांगर, धारवानबास, ढाबढाणी, गोलागढ़, इन्दीवाली, जीतवानबास, जूई कलां, कैरू, खेरपुरा, कुसुंबी, लहलाना, लालावास, लेघा भानान, लेघा हेतवान, लोहानी, मानसरबास, पोकर वास, शिमलीवास, सुंगरपुर व टिटानी आदि गांवों के विकास कार्य शामिल हैं। कैरू के बाद श्रुति चौधरी ने तोशाम रेस्ट हाउस में तोशाम ब्लॉक के गांव रिवासा, बजीना, बिड़ौला, अलखपुरा, भारीवास, दुल्हेड़ी, पटौदी कलां, संडवा, तोशाम, पिजोखरा बागानवाला, छप्पार जोगीयान व ढाणी माहू में 564.97 लाख रुपये की लागत से विभिन्न 17 विकास परियोजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन किया। वहीं दूसरी ओर केबिनेट मंत्री श्रुति चौधरी गांव खरकड़ी में पूर्व सांसद चौधरी जंगबीर सिंह के अंतिम संस्कार में भी शामिल हुई और अपनी तरफ से श्रद्धासुमन अर्पित कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

स्व. बंसीलाल को दी श्रद्धांजलि

चरखी दादरी। भाजपा विधायक सुनील सांगवान की अध्यक्षता में उनके निवास पर आयोजित कार्यक्रम में पूर्व सहकारिता मंत्री दिवंगत सतपाल सांगवान के समर्थकों और गणमान्य व्यक्तियों ने पूर्व मुख्यमंत्री स्व. चौधरी बंसीलाल की पुण्यतिथि पर उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। इसके पश्चात विधायक सुनील सांगवान ने गोलागढ़ पहुंचकर स्व. बंसीलाल की समाधि पर भी माथा टेका और उन्हें नमन किया। विधायक सुनील सांगवान ने कहा कि उनके पिता स्व. सतपाल सांगवान के राजनीतिक जीवन की नींव चौ. बंसीलाल की प्रेरणा पर टिकी थी। कहा कि मेरे पिता ने हमेशा स्व. बंसीलाल जी को अपना आदर्श माना और उनके मार्गदर्शन में ही इस क्षेत्र के विकास को नई ऊंचाइयां प्रदान कीं। आज भले ही वे दोनों हमारे बीच भौतिक रूप से उपस्थित नहीं हैं, लेकिन उनकी स्मृतियां और संस्कार हमारे लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहे हैं। विधायक ने भावुक होते हुए कहा कि वह बेहद सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें ऐसे महान व्यक्तित्वों की छत्रछाया में राजनीति के संस्कार मिले। उन्होंने संकल्प लिया कि वह अपने पिता के अधूरे सपनों को पूरा करने और क्षेत्र की उन्नति के लिए कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखेंगे। वहीं उन्होंने कार्यकर्ताओं को 11 अप्रैल की दादरी विकसित रैली का निमंत्रण दिया और कहा कि रैली में प्रदेश के सीएम नायब सिंह सैनी दादरी को अनेक विकास परियोजनाओं की सौगात देंगे।

पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल को किया नमन

चौधरी बंसीलाल ने करवाया था प्रदेश का चहुंमुखी विकास: अनिरूद्ध

भिवानी। गांव गोलागढ़ में पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल को श्रद्धांजलि देते उनके पौत्र अनिरूद्ध चौधरी, प्रदीप गुलिया व अन्य। फोटो : हरिभूमि

भिवानी। पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल के पौत्र एवं कांग्रेस के ग्रामीण जिलाध्यक्ष अनिरूद्ध चौधरी ने कहा कि उनके दादा पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल केवल एक शख्सियत नहीं, बल्कि एक विचारधारा थे, जिन्होंने हमेशा प्रदेश के विकास एवं तरक्की के लिए कार्य किया। उनकी सोच व स्वप्न था कि हरियाणा के प्रत्येक नागरिक को सभी मूलभूत सुविधाएं मिले तथा उन्होंने दूरदर्शी सोच व कार्यों की बदौलत प्रदेशवासियों के लिए अनेक जनहित के कार्य किए, जिसकी बदौलत आज तक उन्हें पूरे सम्मान के साथ याद किया जाता है। शनिवार को अनिरूद्ध चौधरी अपने दादा पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल की 20वीं पुण्यतिथि पर गांव गोलागढ़ स्थित समाधि स्थल, भिवानी के चौधरी बंसीलाल पार्क व सराय चौपटा स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर नमन करने पहुंचे थे। इस दौरान अनिरूद्ध चौधरी ने कहा कि उनके दादा पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल ने ऐसे समय में प्रदेश का विकास करवाया, जिस वक्त आधूनिक मशीनों का युग नहीं आया था। हर गांव तक सड़क, बिजली पहुंचाई। यहां तक हर गांव ढाणी में पीने के पानी लाइन भी उन्हीं की देन है। पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल ने ही कई फुट ऊंचे टिल्लों पर पम्पसेटों के जरिए पानी पहुंचाई हरियाली तैयार करवाई। इस अवसर पर कांग्रेस शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप गुलिया जोगी, देवराज महता, सत्यजीत पिलानिया, अशोक ढ़ोला, बलवान प्रधान, संजीव जागलान, राममेहर चेयरमैन, बलवान मास्टर, भीम पीएसओ, दिलबाग सरपंच, संदीप सरपंच, विजेंद्र सरपंच, सोमबीर सरपंच आदि मौजूद रहे।

तोशाम के विकास को मिलेगी गति : किरण चौधरी

भिवानी। राज्यसभा सांसद किरण चौधरी ने कहा है कि 31 मार्च को तोशाम में आयोजित होने वाले उन्नत सिंचाई उत्सव कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के आगमन से क्षेत्र के विकास कार्यों को तेज गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस दौरान मुख्यमंत्री करोड़ों की लागत की विकास परियोजनों का उदघाटन/ शिलान्यास करेंगे। साथ ही विभिन्न विकास कार्यों की घोषणाएं भी करेंगे। एक बयान में राज्यसभा सांसद किरण चौधरी ने कहा कि तोशाम क्षेत्र के विकास कार्यों को लेकर वे प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र व प्रदेश की सरकार अंत्योदय के लक्ष्य के साथ हर वर्ग, विशेषकर गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं के उत्थान और कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य के साथ जन कल्याणकारी योजनाओं और बुनियादी ढांचे के विकास पर जोर दे रही है। राज्यसभा सांसद ने कहा कि क्षेत्र के विकास के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

खबर संक्षेप

मोटरसाइकिल चोरी का आरोपी किया गिरफ्तार

भिवानी। थाना सिविल लाइन पुलिस भिवानी ने मोटरसाइकिल चोरी के मामले में तीसरे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। इस संबंध में शिकायतकर्ता हैप्पी निवासी कृष्णा कॉलोनी भिवानी ने थाना सिविल लाइन पुलिस में मोटरसाइकिल चोरी होने की शिकायत दर्ज करवाई थी। थाना सिविल लाइन भिवानी के मुख्य सिपाही संदीप कुमार ने पुलिस टीम के साथ कार्रवाई करते हुए मोटरसाइकिल चोरी के मामले में तीसरे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान पीयूष पुत्र दयानंद निवासी जाटू लोहारी, जिला भिवानी के रूप में हुई है।

माकपा ने पूर्व सांसद के निधन पर जताया शोक

भिवानी। मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी ने पूर्व सांसद जंगबीर सिंह के निधन पर गहरा दुखः प्रकट करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की। राज्य पार्टी के वरिष्ठ सचिव मंडल सदस्य कामरेड इन्द्रजीत सिंह, कामरेड सुरेन्द्र मलिक, जगमति सांगवान व कामरेड ओमप्रकाश सहित कई पार्टी कार्यकर्ताओं ने उनके भिवानी स्थित आवास पर पहुंचकर उन्हें पार्टी की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनके बेटे कमल सिंह प्रधान व डॉ. हरिकेश को सांत्वना दी। बाद में माकपा नेता व कार्यकर्ता तोशाम के खरकड़ी जूई रोड स्थित चौधरी मोहब्बत सिंह फीलिंग स्टेशन के पीछे चौधरी जंगबीर सिंह की अन्तेष्टी में शामिल हुए। हजारों लोगों ने नम आंखों से चौधरी जंगबीर सिंह को श्रद्धांजलि दी।

भिवानी। पूर्व सीएम स्व. बंसीलाल के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए।

चौधरी बंसीलाल हरियाणा के निर्माता थे : संदीप

भिवानी। धानक जनकल्याण मंच हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष संदीप खरकिया ने कहा कि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं विकास पुरुष चौधरी बंसीलाल हरियाणा निर्माता के रूप में जाने जाते थे इसलिए उन्हें को विकास पुरुष भी कहा जाता था आज उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर गांव खरक में उनके चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए कहे इस मौके पर संदीप खरकिया ने कहा कि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल ने गांव-गांव तक बिजली पहुंचाने, पक्की सड़कों का व्यापक जाल बिछाने तथा भिवानी और दादरी जैसे शुष्क एवं रेतीले क्षेत्रों तक नहरों का जल पहुंचाने जैसे ऐतिहासिक कार्य उनके अद्वितीय संकल्प, दूरदर्शी सोच और अथक परिश्रम के प्रतीक हैं। उनके भगीरथ प्रयासों ने हरियाणा के विकास को नई दिशा और गति प्रदान की, जिसे प्रदेश सदैव कृतज्ञता के साथ स्मरण करता रहेगा। संदीप खरकिया ने कहा कि कड़े निर्णय लेने की क्षमता, अटूट इच्छाशक्ति और जनसेवा के प्रति समर्पण ने उन्हें एक सशक्त एवं दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित किया। चौधरी बंसीलाल जी केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि हरियाणा के महान जननायक और सच्चे विकास पुरुष थे। उन्होंने कहा कि चौधरी बंसीलाल ने बिना किसी भेदभाव से हरियाणा प्रदेश का चहुंमुखी विकास करवाया था।

अहिंसा ही धर्म का मार्ग सभी जीव समान हैं : दीपेश मुनि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

चरखी दादरी। जैन स्थानक में प्रवचन करते आनंद मुनि व दीपेश मुनि।

जैन स्थानक परिसर में उप प्रवर्तक आनंद मुनि महाराज व प्रवचन दीवाकर दीपेश मुनि महाराज ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी 24 वें तीर्थंकर हैं, जिन्होंने 30 वर्ष की आयु में राजपाठ त्यागकर 12 वर्षों की कठोर साधना के बाद कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया।

उनके जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि संसार भौतिक नहीं, बल्कि मानसिक है, जो हमारी कामनाओं से बनता है। अहिंसा ही धर्म का मार्ग है सभी जीव समान है। वनस्पति, जल, अग्नि और वायु में भी प्राण हैं, अतः उनका सम्मान आवश्यक करें भौतिक वस्तुओं को छोड़ने से अधिक महत्वपूर्ण है मन से उनकी आसक्ति को छोड़ना।हर समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता, जो सत्य तक पहुँचाती है। दीपेश मुनि ने आंतरिक श्रद्धा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महावीर को मनाने का अर्थ केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि उनके द्वारा बताए गए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के सिद्धांतों का पालन करना है।उप प्रवर्तक आनंद मुनि ने बताया कि अपने भीतर के विकारों जैस क्रोध, मान, माया, लोभ को त्यागना ही सच्चा समर्पण है। महा साध्वी वृष्टि जी महाराज ने बताया कि हमें अपनी जीवन शैली में अपने आचरण में दया, करुणा, क्षमा और प्रेम को उतारना ही उन्हें धारण करना है।

न्यूज डायरी

निःशुल्क चिकित्सा शिविरों में 319 मरीजों को जांचा

चरखी दादरी। जिले के गांव दातोली, सिरसली, गुडाना और बलाली में समाजसेवा की भावना से प्रेरित होकर मॉडल दादरी जिला बनाओ संगठन द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया। शिविरों में 319 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें आवश्यक दवाइयां उपलब्ध करवाई गई। शिविरों का आयोजन दातोली के पंचायत घर, बलाली के राजकीय स्कूल, गुडाना में रवि यादव के निवास स्थान तथा सिरसली में सीएससी सेंटर पर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अनिल फोगाट, रमेश पहल, रवि यादव और विजय फोगाट द्वारा की गई। वहीं बतौर मुख्य अतिथि धर्मपाल राव, समुंदर शर्मा, श्रीराम श्योराण और विजेंद्र शर्मा ने शिरकत की। इस अवसर पर आई क्यू हॉस्पिटल, गीतांजलि और पवन धीरेंद्र की टीम ने अपनी सेवाएं दी। चिकित्सकों में डॉ. शिवम, डॉ. ओमप्रकाश, डा. संतोष, डा. स्वाति और डॉ. एसके रॉय सहित अन्य विशेषज्ञ डॉक्टरों ने मरीजों की जांच की।

जरूरतमंद बच्चों की मदद के लिए जुड़ रहे हैं लोग

चरखी दादरी। समाज सेवा के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय "खुशियों की दीवार" संस्था द्वारा जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए "उम्मीद की पाठशाला" अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों को निशुल्क पुस्तक सामग्री उपलब्ध करवाई जा रही है, ताकि वे अपनी पढ़ाई बिना किसी बाधा के जारी रख सके। सामाजिक कार्यकर्ता संजय रामफ़ल द्वारा संचालित इस पहल का उद्देश्य समाज के उन लोगों तक शिक्षा पहुंचाना है, जिनके पास संसाधनों की कमी है। संजय रामपाल ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि जिन घरों में अतिरिक्त या उपयोग में न आने वाली पुस्तकें हैं, वे उन्हें "खुशियों की दीवार" पर जमा कराएं, ताकि ये पुस्तकें जरूरतमंद बच्चों तक पहुंच सकें। प्रत्येक रविवार सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक खुशियों की दीवार से प्राप्त कर ले।

शिविर में 278 मरीजों की आंखें व सामान्य रोग जांचे

चरखी दादरी। पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल की पुण्यतिथि पर माडल दादरी जिला बनाओ संगठन द्वारा मेडिकल कैंपों के जरिए उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। विभिन्न गांवों अटेला, बिहरी, डोहका हरिया आदि में आयोजित कैंपों की अध्यक्षता नीरज सांगवान, शमशेर सांगवान, सुरेश कडवासरा ने की। मुख्य अतिथि हरेंद्र मान, नरवीर बिडलान, मोहिंद्र मान रहे। कैंपों के दौरान आई केयर, आई क्यू गीताजंली, पवन धीर अस्पताल आदि की टीमों गुरूदीप, संतोष, नरेंद्र, स्वाती व सहयोगियों ने 278 आंख व सामान्य रोग के मरीज जांचे दवा वितरण हुआ। संगठन युवा विंग अध्यक्ष अधिवक्ता डॉ. अनिल बलवान साहू ने कहा कि हरियाणा के वर्तमान विकास के दौरा में पहुंचने के लिए दिवगंत मुख्यमंत्री बंसीलाल का कार्यकाल भी काफी अहम रहा। उन्हें उनके विकास कार्यों के चलते उनके समर्थक व अनुयायी लौह पुरुष कहते थे जो कि आम जनहित में कभी झुके नहीं। इस मौके पर जितेंद्र, रिषी, चांद, गोपाल, हरवीर, सतेंद्र, कमल, सचीन, ललित, मंगली, रंजीत थे।

पंचतत्व में विलीन हुए जंगबीर सिंह, पुत्र कमल प्रधान व डॉ. हरिकेश पंघाल तथा पौत्र डॉ. मानव पंघाल ने मुखाग्नि दी

हरिभूमि न्यूज,तोशाम

जंगबीर सिंह अमर रहें और जब तक सूरज चांद रहेगा, जंगबीर सिंह तेरा नाम रहेगा के गगनभेदी नारों से वातावरण गुंजायमान रहा, जब पूर्व सांसद एवं पूर्व सैनिक चौधरी जंगबीर सिंह की अंतिम यात्रा उनके निजी निवास पंघाल भवन से प्रारंभ हुई। भारी जनसैलाब के साथ अंतिम यात्रा उनकी जन्मस्थली एवं कर्मस्थली तोशाम पहुंची। परमसंत हुजूर कंवर साहेब जी महाराज की पावन दृष्टि के समक्ष उनके सुपुत्र कमल प्रधान व डॉ. हरिकेश पंघाल तथा पौत्र डॉ. मानव पंघाल ने मुखाग्नि दी। अंतिम यात्रा में समाज का हर तबका शामिल हुआ

अंतिम यात्रा में ये रहे उपस्थित

सांसद एवं पूर्व सैनिक चौधरी जंगबीर सिंह की यात्रा में परमसंत हुजूर कँवर साहेब महाराज,महिला एवं बाल कल्याण मंत्री श्रुति चौधरी,पूर्व सांसद चौ कुलदीप बिश्नोई,बिहार से राष्ट्रीय जनता दल के राज्यसभा सांसद संजय यादव,युवा नेता दिग्विजय चौटाला,विधायक रणधीर पनिहार,विधायक घनश्याम सर्राफ,विधायक सुनील सतपाल सांगवान,पूर्व विधायक शशि रंजन परमार,पूर्व विधायक रण सिंह मान,पूर्व विधायक सोमबीर श्योरण,पूर्व विधायक सोमबीर सांगवान, पूर्व विधायक रामकिशन फौजी,जिला कांग्रेस के प्रधान अनिरुद्ध चौधरी,प्रदीप गुलिया जोगी , पंडित जयभगवान शर्मा,ढादरी जिला कांग्रेस के प्रधान सुशील धानक,कामरेड इंद्रजीत,कामरेड ओमप्रकाश,तोशाम के सरपंच राजेश कुमार,पंघाल खाप के प्रधान दलजीत पंघाल, बाबा चरण दास,नंदकिशोर अग्रवाल,ब्रिगेडियर सत्यव्रत श्योराण संजय बिश्नोई एसडीएम महावीर प्रसाद हरेंद्र श्योराण जेल सुपरिंटेंडेंट कपिल शर्मा एसडीएम,कांग्रेसी नेता संदीप सिंह,परमजीत मद्धू,रज्जू अहलावत,सांसद धर्मबीर के पुत्र मोहित चौधरी, जितेंद्रनाथ, नरेश तंवर,ब्रह्मानंद एडवोकेट,बार काउंसिल के प्रधान संदीप तंवर बार काउंसिल के पूर्व प्रधान सत्यजीत पिलानिया,जोगिंदर तंवर,देवेंद्र सोढ़ी,कर्नल मंगल सिंह,छात्र संघ के पूर्व प्रधानों में संपुर्ण सिंह,विजय मोटू,सरवर सिंह, बलवान सिंह,रतनपाल पहाड़ी और बलवान सिंह ,राजू मान,जितेंद्र भोलू,सूबे सिंह आर्य नरेश जांगड़ा चेयरमैन, युद्धबीर चेयरमैन,द्रोणाचार्य अवार्डी जगदीश कोच,जिला पार्षद प्रदीप तंवर,तोशाम के पूर्व सरपंच देवराज तोशामिया सहित कई संगठनों के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्वयंसेवकों को व्यक्तित्व विकास के गुर सिखाए

भिवानी। राजकीय मॉडल संस्कृति वमा विद्यालय में आयोजित सात दिवसीय जिला स्तरीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के चौथे दिन शनिवार को स्वयंसेवकों को राष्ट्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास के गुर सिखाए। विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी शाखा भिवानी के विशेषज्ञों ने युवाओं को संदेश दिया कि राष्ट्र का पुर्नत्थान केवल तभी संभव है, जब प्रत्येक नागरिक का चरित्र निर्माण सुदृढ़ हो। प्रथम सत्र में विवेकानंद केंद्र के विभाग प्रमुख लाल बहादुर शास्त्री ने अपनी टीम नीलम, जीनू, प्रीतम और साहिल के साथ शिरकत की। उन्होंने खेल, कहानियों एवं संवाद के माध्यम से स्वयंसेवकों को जीवन के ध्येय और मूल्यों से परिचित करवाया।

भिवानी। तेल व गैस को लेकर मीटिंग में निर्देश देते उपायुक्त।

पेट्रोल, डीजल व एलपीजी गैस पर्याप्त : डीसी

भिवानी। डीसी साहिल गुप्ता की अध्यक्षता में लघु सचिवालय स्थित डीआरडीए हॉल में पेट्रोल, डीजल व एलपीजी गैस की सुचारू रूप से आपूर्ति को लेकर समीक्षा बैठक आयोजित हुई। डीसी ने कहा कि जिले में पर्याप्त मात्रा में पेट्रोल, डीजल व एलपीजी उपलब्ध है। उन्होंने नागरिकों से भी आह्वान करते हुए कहा कि वे जरूरत के अनुरूप ही पेट्रोल, डीजल व एलपीजी गैस लें, इनका स्टॉक ना करें। इसके साथ ही उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि घरेलू एलपीजी गैस का उपयोग केवल घरेलू कार्यों के लिए ही किया जाए। अगर कोई इसका व्यावसायिक उपयोग करते हैं तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। गैस एजेंसियों पर घरेलू एलपीजी मांग के अनुसार पर्याप्त स्टॉक सुनिश्चित किया जाए। डीसी ने डीएफएसई अपार तिवारी से जिले में गैस एजेंसी व पेट्रोल पंपों पर गैस व पेट्रोल की उपलब्धता के बारे में जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए कि राशन डिपो व लेबर केंटीन पर खाद्य आपूर्ति व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए सतत निगरानी रखें। घरेलू गैस व पेट्रोल-डीजल की किसी भी कीमत पर कालाबाजारी या जमाखोरी न हो। इसके लिए छापेमारी की जाए। नागरिकों को नियमानुसार सुचारू रूप से घरेलू गैस व पेट्रोल-डीजल मिलना चाहिए ताकि दिनचर्या प्रभावित ना हो। इसके साथ ही उन्होंने निर्देश दिए कि फसल खरीद के दौरान मंडियों में भी सभी जरूरी व्यवस्थाएं हो।

लिटिल हार्टस स्कूल में वार्षिक एवं पारितोषिक वितरण समारोह

विद्यार्थियों ने हरियाणवी व पंजाबी संस्कृति की बिखेरी छटा

720 बच्चों ने स्कॉलरशिप ग्रहण की।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह व पार्षद सुभाष तंवर को स्मृति चिन्ह भेंट करते पवन गोयल व अन्य तथा लिटिल हार्टस स्कूल में हरियाणवी नृत्य की प्रस्तुति देती छात्राएं। फोटो :हरिभूमि

हालुवास गेट स्थित स्कूल में दूसरे दिन लिटिल हार्टस पब्लिक स्कूल देवसर व लिटल हार्टस पब्लिक स्कूल भिवानी की चतुर्थ कक्षा व लिटिल हार्टस कान्वेंट स्कूल की प्रथम कक्षा का वार्षिक एवं पारितोषिक वितरण समारोह हुआ।

आयोजन हनुमान जोहड़ी मंदिर के महंत चरणदास महाराज के सानिध्य व स्कूल प्रधान त्रिलोकचंद गोयल की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर प्रातःकालीन सत्र में पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी नरेश मेहता व शायकालीन सत्र में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन प्रोफेसर पवन कुमार, नगर परिषद के चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह, पार्षद सुभाष तंवर बतौर मुख्यतिथि पहुंचे।

कक्षा सातवीं व आठवीं की छात्राओं ने मनमोहक स्वागत गीत व गणेश वंदना प्रस्तुत की। समारोह में स्कूल के बच्चों ने हरियाणवी नृत्य, स्वागत गीत व मधुर गीतों पर सामुहिक प्रस्तुतियां देकर दर्शकों का मन मोह लिया। स्कूल के प्रधान त्रिलोकचंद गोयल ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर लगभग 720 बच्चों ने स्कॉलरशिप ग्रहण की। स्कूली बच्चों ने अतिथियों के स्वागत में स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुख्यतिथि ने कहा कि बाल्यकाल में प्रत्येक व्यक्ति में आत्मिक विकास की अपार संभावनाए छिपी होती है, उन्हें निकालने के लिए कुशल अध्यापक का होना जरूरी है।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर गिगि देवी, शकुन्तला देवी, आनन्द प्रकाश गोयल, संजय गोयल, सीमा गोयल, भावना गोयल, सतीश गोयल, एश्वर्या सिंघल, रामानन्द सिंघल, राहुल गोयल, विनय गोयल, निश्चल गोयल, प्राचार्य दीपक जोशी व उपप्राचार्य मनमोहन चावला आदि मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

दुर्गा है मेरी मां, अंबे है मेरी मां...

तोशाम। शुक्रवार देर रात्रि रामनवमी तथा नवरात्रि विश्राम के अवसर पर तोशाम के वैष्णो मां मंदिर परिसर में हर बार की भांति अबकी बार भी माता रानी की परम भक्त नीलम वलेचा के सानिध्य में जागरण तथा भंडारे का आयोजन किया गया। इस मौके पर कलकत्ता के फूलों से माता रानी का भव्य दरबार सजाया गया जोकी समस्त भक्तगणों के आकर्षण का केंद्र रहा। इस दौरान आयोजित भंडारे में अनेक श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया तो जागरण का शुभारंभ माता रानी की भक्त नीलम वलेचा ने दीप प्रज्वलन के साथ किया।

एक अप्रैल से शुरू होंगी खेल नर्सरियां

भिवानी। खेल प्रतिभाओं को निखारने के उद्देश्य से सत्र 2026-27 में खेल नर्सरियों का संचालन एक अप्रैल से शुरू किया जाएगा। इस संबंध में खेल विभाग हरियाणा द्वारा सभी जिला खेल अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। जिला जिला खेल अधिकारी विद्यानंद यादव ने बताया कि राज्य में विभागीय प्रशिक्षकों द्वारा खेल नर्सरियां संचालित करना अनिवार्य किया गया है। ऐसे में जिल में प्रशिक्षकों के माध्यम से खेल नर्सरियों का संचालन सुनिश्चित करें।

मादक पदार्थ के साथ बाबा काशीनाथ गिरफ्तार

भिवानी। सीआईए स्टाफ द्वितीय भिवानी की टीम ने आरोपी को हेरोइन सहित गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान बाबा काशीनाथ पुत्र योगी बाबा उमेश निवासी दिनोद के रूप में हुई है। आरोपी के कब्जे से 10.50 ग्राम मादक पदार्थ हेरोइन बरामद हुई।

अंबेडकर जयंती को लेकर बैठक आज

बाढ़ड़ा। रविदास मंदिर में रविवार को डॉ. भीमराव आंबेडकर समाज कल्याण ट्रस्ट की महत्वपूर्ण बैठक होगी। बैठक में अंबेडकर जयंती समारोह की रूपरेखा तैयार की जाएगी। ट्रस्ट के प्रधान महावीर मोद, राजेश खिंची व रमेश गोपी ने बताया कि 14 अप्रैल को होने वाली जयंती को लेकर विचार-विमर्श किया जाएगा।

सरकारी खरीद पर निजी व्यापारी पड़े भारी

शनिवार को ज्यादातर किसानों ने अपनी सरसों की फसल निजी व्यापारियों को ही बेची

भिवानी में तीन किसान पहुंचे सरसों बेचने बवानीखेड़ा में पूरा दिन करते रहे इंतजार

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

सरकारी भाव में सरसों की खरीद के लिए सरकारी एजेंसियां पूरी तरह से तैयार रही। किसानों की सरसों की फसल खरीदने के लिए भिवानी व बवानीखेड़ा अनाजमंडी के गेटों पर गेटपास के लिए कर्मचारी तैनात कर दिए। भिवानी अनाजमंडी में पूरे दिन में तीन किसान ही सरकारी एजेंसी को सरसों बेचने के लिए पहुंचे। जिन के कर्मचारियों ने गेट पास जारी कर दिए। वहीं बवानीखेड़ा अनाजमंडी में एक भी किसान सरसों बेचने के लिए पहुंचा। हालांकि पूरे दिन कर्मचारी मोबाइल फोन लिए ही गेट पर बैठा रहा,लेकिन कोई भी किसान सरकारी एजेंसी को सरसों बेचने के लिए नहीं पहुंचा।

सरकारी एजेंसी सरसों 62 सौ रुपये खरीद रही है,जबकि निजी व्यापारी सरसों को 68 सौ से लेकर सात हजार रुपये तक खरीद रहे

शनिवार को ज्यादातर किसानों ने अपनी सरसों की फसल निजी व्यापारियों को ही बेची। जिससे पूरे दिन अनाजमंडियों में विरानी सी छाई रही। तय कार्यक्रम के हिसाब से भिवानी अनाजमंडी के गेट पर एक कर्मचारी तैनात किया गया। उक्त कर्मचारी मोबाइल लिए बैठा रहा। दोपहर तक भिवानी अनाजमंडी में केवल दो किसान तथा शाम चार बजे तक एक किसान और अपनी सरसों की फसल लेकर अनाजमंडी में पहुंचा। वहां पर तैनात कर्मचारी ने मोबाइल पर लोड पोर्टल पर किसान के वाहन व किसान का फोटो अपलोड किया तो उसका एक मैसेज किसान के पंजीकृत मोबाइल तथा दूसरा मैसेज जिस आढ़ती की दुकान पर ले जाना है। उसके फोन पर मैसेज पहुंच गया। शनिवार को अनेक किसानों ने सरसो की फसल निजी व्यापारियों के पास बेची। जिस वजह से अनाजमंडी में दिनभर केवल तीन से चार ढेरियां ही पहुंच पाई।

भिवानी। भिवानी अनाजमंडी के गेट पर तैनात पुलिस। फोटो: हरिभूमि

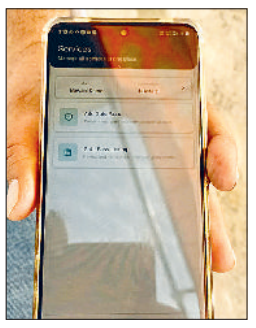

बवानी खेड़ा। बवानीखेड़ा में मोबाइल पर गेट पास की प्रक्रिया दिखाता कर्मचारी व किसानों के इंतजार में बैठा मार्केट कमेटी का कर्मचारी, जो कि मोबाइल फोन पर ही गेट पास जारी करेगा। फोटो: हरिभूमि

भिवानी। अनाजमंडी में सरसो की ढेरी। फोटो: हरिभूमि

सरकारी खरीद की पूरी तैयारियां

मार्केट कमेटी के सचिव देवेंद्र कुमार ने बताया कि उन्होंने सरसों की सरकारी खरीद की पूरी तैयारियां की हुई है। आज भिवानी अनाजमंडी के गेट पर एक कर्मचारी को बैठाया गया था। वह मोबाइल पर ही किसान ,उसके वाहन का फोटो ऐप पर लोड कर रहा था। गेट पास जारी करने की सारी प्रक्रिया पूरी करने के बाद ही किसान व संबंधित आढती के पास मोबाइल फोन पर गेट पास जारी होने का मैसेज पहुंच जाएगा।

बवानीखेड़ा खरीद केंद्र पर एक भी नहीं पहुंचा किसान

सरसों की सरकारी खरीद के पहले दिन एक भी किसान अपनी फसल लेकर अनाजमंडी में नहीं पहुंचा। हालांकि मार्केट कमेटी ने एक कर्मचारी को गेट पर तैनात कर दिया। वह मोबाइल फोन लेकर सुबह से लेकर शाम तक बैठा रहा,लेकिन कोई भी किसान फसल लेकर नहीं पहुंचा। दूसरी तरफ आढ़ती भी सरसों की खरीद के लिए तैयार रहे। पर किसान न आने से उनको आज मायूसी हाथ लगी। यहां यह बताते चले कि सरकारी एजेंसी सरसों 62 सौ रुपये खरीद रही है,जबकि निजी व्यापारी सरसों को 68 सौ से लेकर सात हजार रुपये तक खरीद रहे है। जिस वजह से किसान अपनी सरसों की फसल को सरकारी एजेंसी की बजाए निजी व्यापारियों को बेचना ज्यादा पसंद कर रहे है।

भिवानी। गेट पास के इंतजार में खड़े किसान। फोटो: हरिभूमि

निर्माण कार्य की गुणवत्ता का ध्यान रखें

- सर्वांगीण विकास के लिए परिषद और पार्षद पूरी तरह से संकल्पबद्ध : सैनी

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

नप चेयरमैन बख्शीराम सैनी ने कहा कि दादरी शहर के सर्वांगीण विकास के लिए परिषद और पार्षद पूरी तरह से संकल्पबद्ध हैं। सभी पार्षद अपने वार्डों में विकास कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। चेयरमैन शनिवार को नगर के वार्ड नंबर 5 में इंटरलॉकिंग टाइल्स के माध्यम से बन रही नई गली के निर्माण कार्य का उद्घाटन के के बाद संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा निर्माण कार्य में गुणवत्ता से कोई समझोता नहीं किया जाएगा।

चरखी दादरी। नारियल फोड़कर निर्माण कार्य का शुभारंभ करते । फोटो: हरिभूमि

बिना भेदभाव के करवाया जा रहा विकास

शनिवार को नारियल फोड़कर निर्माण कार्य का शुभारंभ करते हुए चेयरमैन ने कहा कि शहर के सभी वार्डों में बिना किसी भेदभाव के समान रूप से विकास कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा सभी पार्षद इस बात पर सहमत है कि दादरी के प्रत्येक कोने में नागरिक सुविधाएं पहुंचनी चाहि हमारा लक्ष्य है कि शहर की कोई भी गली कच्ची न रहे जल निकासी की व्यवस्था सुदृढ़ हो। बख्शीराम सैनी ने नागरिकों को भरोसा दिलाया कि नगर परिषद प्रशासन पूरी तेजी के साथ सभी क्षेत्रों में नई गलियों और सड़कों के निर्माण में जुटा हुआ है।

डीएचबीवीएन निदेशक ने ली समीक्षा बैठक

भिवानी। दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम (डीएचबीवीएन) के निदेशक ऑपरेशन विपिन गुप्ता की अध्यक्षता में भिवानी सर्कल कार्यालय में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। समीक्षा बैठक में अधीक्षक अभियंता विनोद पूनिया भी मौजूद रहे। बैठक के दौरान लाइन लॉस / एटी एंड सी लॉस, बकायेदार उपभोक्ताओं से वसूली, कलेक्शन एफिशिएंसी, पीएम सूर्य घर योजना की प्रगति, ग्रीष्मकालीन तैयारियां, 11 केवी व 33 केवी फीडरों पर मेंटेनेंस कार्य, एलआरए नोटिस जारी करने व उनकी प्रगति, बिजली चोरी के मामलों में कार्रवाई व वसूली आदि विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत समीक्षा की गई। निदेशक ऑपरेशन विपिन गुप्ता ने कहा कि सभी मानकों पर कार्य में तेजी लाई जाए।

नामांकन बढ़ाने को चलाया अभियान

- बीईओ ने कहा : सरकारी विद्यालयों में दी जा रही बेहतर सुविधाएं

हरिभूमि न्यूज ⏭ लोहारू

खंड के सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों की नामांकन संख्या बढ़ाने को खंड शिक्षा अयिाकारी विजय प्रभा के नेतृत्व में सभी सरकारी विद्यालयों के मुखियाओं और स्टाफ सदस्यों ने नामांकन प्रचार अभियान शुरू कर दिया है। शनिवार को बीईओ विजय प्रभा के नेतृत्व में पीएसश्री कन्या विद्यालय और मॉडल संस्कृति राजकीय प्राथमिक पाठशाला के स्टाफ सदस्यों ने विभिन्न वार्डों में प्रचार अभियान चलाया और लोगों को सरकारी विद्यालयों में दाखिला करवाने के लिए प्रेरित किया।

लोहारू। लोहारू सरकारी विद्यालयों के प्रवेश के लिए प्रचार अभियान चलाते हुए बीईओ विजय प्रभा व स्टाफ सदस्य। फोटो: हरिभूमि

इस साल 15 हजार नामांकन लक्ष्य

खंड शिक्षा शिक्षा अधिकारी विजय प्रभा ने बताया कि लोहारू खंड में 16 राजकीय सीनियर सेकेंडरी, 4 राजकीय उच्च विद्यालय, 12 राजकीय मिडिल स्कूल और 65 राजकीय प्राथमिक पाठशालाएं हैं, जिनमें करीब 12 हजार 210 से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं। उन्होंने बताया कि इस बार इन सरकारी विद्यालयों में नामांकन संख्या 15 हजार करने का लक्ष्य रखा गया गया है । उन्होंने बताया कि सरकारी विद्यालयों शिक्षित और योग्य स्टाफ द्वारा गुणात्मक शिक्षा दी जाती है तथा मॉडल स्कूल और पीएम श्री स्कूलों में डिजिटल बोर्ड सुविधा है। इस दौरान मुकेश चंद्र, रवींद्र, दीपक, सोमवीर, जगवीर, महेश ग्रेवाल, प्रवींद्र, सरोज कुमारी, सुनीता कुमारी, सुदेश कुमारी, निर्मला सहित स्टाफ सदस्य उनके साथ थे।

एसडीओ उमेद सिंह को किया सेवानिवृत्ति पर सम्मानित

बाढ़ड़ा। राजकीय पशु चिकित्सालय बाढ़ड़ा परिसर में पशुपालन विभाग के उपमंडल अधिकारी डॉ. उमेद सिंह के सेवानिवृत्ति पर समारोह का आयोजन किया। पशुपालन विभाग के कर्मचारी संगठनों व पशु चिकित्सकों ने पहुंचकर उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया। एसडीओ डॉ. उमेद सिंह के सेवानिवृत्ति समारोह में मुख्यतिथि डॉ. सहीराम, राज्य महासचिव निर्मल श्योराण, प्रमोद कुमार जिला सचिव, दिनेश दलाल पूर्व जेएसी सदस्य, बीएलईओ राजेंद्र सिंह, मनोज यादव पूर्व जिला प्रधान भिवानी, प्रदीप, विकास फौजी आदि मौजूद रहे। समारोह के दौरान सभी वक्ताओं ने डॉ. उमेदसिंह के विभाग में दिए उत्कृष्ट योगदान की सराहना की तथा उनके स्वस्थ, सुखद एवं दीर्घायु जीवन की कामना की।

पशु चोरी के मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार

बवानीखेड़ा। सीआईए स्टाफ प्रथम भिवानी की टीम ने गांव पपोसा में हुई भैंस व कटडी चोरी के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। जगबीर निवासी गांव पपोसा ने थाना बवानी खेड़ा में भैंस और कटड़ी चोरी होने की शिकायत दर्ज करवाई थी। इसी मामले में प्रभावी कार्रवाई करते हुए 27 मार्च को सीआईए स्टाफ प्रथम भिवानी के मुख्य सिपाही राजीव कुमार की टीम ने माननीय न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट प्राप्त कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया। पहचान अब्दुल निवासी मोहल्ला देवीदास, जिला मुजफ्फरनगर, गुफरान निवासी जिला मुजफ्फरनगर , अरशद पुत्र हाजी इस्लाम निवासी भगरा, जिला मुजफ्फरनगर के रूप में हुई है।

शिक्षकों ने चलाया दाखिला अभियान

- बच्चों को सरकारी स्कूल में प्रवेश को लेकर भविष्य संवारने को चलाया संपर्क अभियान

हरिभूमि न्यूज ⏭ बाढ़ड़ा

राजकीय प्राथमिक पाठशाला डुडीवाला किशनपुरा में मुख्य शिक्षक राजवीर सिंह रांगी के अध्यक्षता में डोर टू डोर बच्चों की दाखिले अभियान शुरुआत की।

मुख्य शिक्षक राजवीर सिंह रांगी ने कहा कि अभिभावकों से मुलाकात के दौरान उन्होंने सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से अवगत करवाते हुए कहा कि बच्चों को सरकारी स्कूल में डिजिटल कक्षाएं, प्रोजेक्ट की सुविधा एवं हर कक्षा में एलईडी वाईफाई द्वारा संचालित कक्षाओं में सीसीटीवी की सुविधा डिजिटल लाइब्रेरी आदि उपलब्ध करवाने सहित अन्य योजनाओं से अवगत करवाया है।

ग्राम पंचायत एवं विद्यालय प्रबंध समिति सभी ने सहयोग किया और गांव वालों ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि हररोज स्कूल को कमेटी चेक करती है और अच्छी पढ़ाई का दौर चला हुआ है, इसलिए हर अभिभावक से निवेदन है कि बच्चों के ज्यादा से ज्यादा दाखिले हमारे सरकारी स्कूल में करवा ताकि बच्चों की हर सुविधा पूरी की जा सके, जिसमें बहुत ही अनुभवी अध्यापक निरंजन कुमार, संजय कुमार सांगवान, सतीश कुमार, अनुराग, परीक्षित आदि सभी अध्यापकों ने इसमें हिस्सा लिया।

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में अभिभावक और शिक्षक बैठक का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭ बवानीखेड़ा

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस, मिलकपुर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उन्मुखीकरण कार्यक्रम एवं पेरेंट्स टीचर मीटिंग का आयोजन किया गया।

यह मीटिंग नर्सरी से नौवीं तथा ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के अभिभावकों के लिए आयोजित की गई, जिसमें नई शिक्षा नीति 2020, नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क, फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी , कंपीटेंसी बेस्ड एजुकेशन तथा होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम में अभिभावकों को बताया गया कि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत बच्चों की शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, कौशल आधारित और विद्यार्थी केंद्रित बनाया जा रहा है। साथ ही, फाउंडेशनल लिटरेसी और न्यूमेरेसी के माध्यम से प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा और गणित की मजबूत नींव तैयार करने पर विशेष बल दिया गया। कंपीटेंसी बेस्ड एजुकेशन के जरिए विद्यार्थियों की समझ, रचनात्मकता और समस्या समाधान क्षमता को विकसित करने की दिशा में स्कूल के प्रयास साझा किए गए। स्कूल चेयरमैन आनंद यादव ने कहा कि एनईपी 2020 विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

एमएनएस राजकीय महाविद्यालय में आपदा प्रबंधन व प्राथमिक सहायता शिविर संपन्न

विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन, प्राथमिक सहायता एवं सेवा की दिलवाई शपथ

- संकट के समय मूकदर्शक बनने की बजाय फर्स्ट रिस्पॉन्डर की भूमिका निभाने में सक्षम बने युवा : सचिव

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

महाराजा नीमपाल सिंह राजकीय महाविद्यालय में जिला रेडक्रॉस सोसायटी के सौजन्य से आपदा प्रबंधन एवं प्राथमिक सहायता शिविर का आयोजन किया।

शिविर रेडक्रॉस अध्यक्ष एवं उपायुक्त साहिल गुप्ता के मार्गदर्शन और रेडक्रॉस सचिव प्रदीप कुमार के नेतृत्व में आयोजित किया, जिसका मुख्य उद्देश्य युवाओं को आपातकालीन स्थितियों के लिए तैयार करना था। शिविर के दौरान रेडक्रॉस के फर्स्ट एड प्रवक्ता हरेंद्र पुनिया ने मुख्य प्रशिक्षक की भूमिका निभाई। उन्होंने विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि आपदा के समय जीवन बचाने के व्यावहारिक तरीकों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने से पहले दी जाने वाली आवश्यक मदद, दिल का दौरा पड़ने की स्थिति में जीवन रक्षक तकनीक, दुर्घटना के समय अत्यधिक खून बहने से रोकने के तरीके, आगजनी, भूकंप या अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय सूझबूझ से बचाव संबंधी अहम जानकारियां दी। प्रशिक्षण के अंत में विद्यार्थियों को भविष्य में किसी भी जरूरतमंद की मदद करने और समाजसेवा के प्रति समर्पित रहने की सामूहिक शपथ दिलाई।

आभार जताया

जिला रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव प्रदीप कुमार ने कहा कि युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती है, हमारा उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को इतना सक्षम बनाना है कि वे संकट के समय मूकदर्शक बनने की बजाय फर्स्ट रिस्पॉन्डर की भूमिका निभा सकें। सचिव प्रदीप ने बताया कि आपदा कभी बताकर नहीं आती, लेकिन हमारी तैयारी निश्चित रूप से जान-माल के नुकसान को कम कर सकती है। प्राचार्य जगबीर सिंह ने जिला रेडक्रॉस सोसायटी का आभार जताया। इस अवसर पर उपप्राचार्य जगवीर मान, रैडक्रॉस कन्वीनर सुनीता सांगवान, रैडक्रॉस रिबन क्लब व एनएसएस ऑफिसर दीपिका, मंजू व सुरेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

दुधिया रोशनी से नहाएंगी बवानीखेड़ा की गलियां और सड़कें

- टेंडर प्रकिया पूरी होने के बाद वर्क ऑर्डर दिया : नपा अध्यक्ष

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा में ही गली सड़क दूधिया रोशनी से नहाते हुए दिखाई देगी। जिसके लिए नगर पालिका प्रशासन द्वारा बिजली मेंटिनेंस का वर्क ऑर्डर जारी कर दिया है जिसके चलते ठेकेदार द्वारा भी कार्य शुरू कर दिया गया है। इस संबंध में नगर पालिका अध्यक्ष सुंदर अत्री ने बताया कि टेंडर प्रकिया पूरी करने के बाद वर्क ऑर्डर दे दिया गया है तथा कस्बे में खराब पड़ी स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत एवं रखरखाव का काम तेजी से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि नगर वासियों को बेहतर प्रकाश व्यवस्था उपलब्ध करवाना नगर पालिका की प्राथमिकता है। मेंटेनेंस कार्य पूर्ण होने के बाद जल्द ही पूरे कस्बे की स्ट्रीट लाइटें सुचारू रूप से कार्य करने लगेंगी।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 29 मार्च 2026

जीवन की दिशा बदल देगा जापानी दर्शन
मिलेगी अच्छी सेहत-खुशी और सुकून

शांति पसंद करने वाले खुशहाल-समृद्ध देश जापान के लोगों का जीवन दर्शन ही ऐसा है, जो उन्हें बेहतर स्वास्थ्य और भरपूर सुकून देता है। जापानी जीवन दर्शन के कुछ सरल सिद्धांत अपनाकर आप भी अपने जीवन में खुशहाली के साथ सफलता भी हासिल कर सकते हैं। जापानी दर्शन के ऐसे ही कुछ सिद्धांतों के बारे में जानिए।

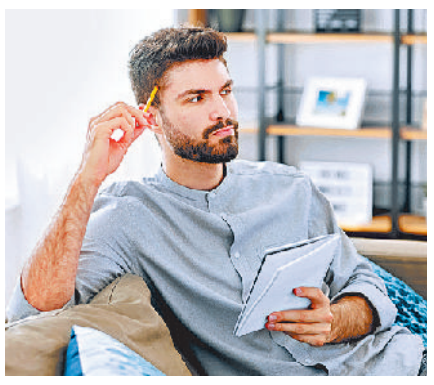

{ कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन }

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर कोई सफलता के साथ-साथ सुकून और शांति की चाहत भी रखता है। लेकिन समृद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा के पीछे भागते हुए हम अकसर उस सबसे कीमती चीज को खो देते हैं, जिसे 'सुकून' कहते हैं। गलत खान-पान, बढ़ती मानसिक-शारीरिक बीमारियां, तनाव, अकेलापन और हर वक्त मन में कुछ अधूरा-सा महसूस होना, आधुनिक समय में लगभग हर व्यक्ति की समस्या बन चुकी है। ऐसे में सदियों पुराने जापानी जीवन दर्शन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

हारा हाची बु सेहत-दीर्घायु का आहार मंत्र

जापानी स्वास्थ्य दर्शन का एक गोल्डन रूल है 'हारा हाची बु'। इसका सरल अर्थ है, 'केवल तब तक खाएं, जब तक आपका पेट 80 प्रतिशत न भर जाए।' यह सिद्धांत हमें 'ओवर ईटिंग' से बचाता है। वैज्ञानिक रूप से, मस्तिष्क को पेट भरने का संकेत मिलने में लगभग 20 मिनट लगते हैं। जब हम 80 प्रतिशत पर रुक जाते हैं, तो हम वास्तव में अपनी भूख के अनुसार सटीक मात्रा में खाते हैं। यह आदत हमें मोटापे, हृदय रोग और मधुमेह को दूर रखती है। जापान के प्रांत ओकिनावा के लोगों की लंबी उम्र का एक बड़ा कारण इस जीवन दर्शन को माना जाता है।

शोकूनिन अपने काम में रुचि लेना

जो लोग अपने पेशे या व्यवसाय को बोझ समझते हैं और अपनी किस्मत को कोसते हुए इसे किसी तरह निपटाने की मानसिकता रखते हैं, वे न तो प्रोफेशनल फ्रंट पर सफल हो पाते हैं न सुखी रहते हैं। ऐसे में आपको जापानी दर्शन 'शोकूनिन' समझना चाहिए। इसका अर्थ केवल 'कारीगर' से संबंधित नहीं है, बल्कि यह एक दृष्टिकोण है। एक शोकूनिन अपने काम को पूर्णता के साथ करने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देता है, चाहे वह सुशी जैसी डिश बनाना हो या जूते की सिलाई करना हो। इसमें हमारे काम के प्रति गहरी जिम्मेदारी का भाव निहित होता है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि काम केवल पैसा कमाने का जरिया नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व को निखारने का एक साधन भी है। जब हम शोकूनिन भाव से काम करते हैं, तो काम बोझ नहीं, बल्कि आनंद का जरिया बन जाता है।

काइजन छोटे सुधारों का जादू महसूस करें

जापानी दर्शन काइजन का अर्थ है-बेहतरी के लिए बदलाव। अकसर हम सोचते हैं कि जीवन बदलने के लिए रातों-रात कोई बड़ा परिवर्तन करना होगा। लेकिन काइजन कहता है कि आप हर दिन स्वयं में केवल एक प्रतिशत सुधार करें। जैसे आदतों में, अनुशासन में, नई चीजें सीखने में, रिश्तों में। ये छोटे-छोटे सुधार साल के अंत में आपको एक नया इंसान बना देंगे। टोयोटा जैसी कंपनियों की सफलता में बड़ी भूमिका निभा चुकी यह जीवन पद्धति, व्यक्ति के रूप में हमें भी नई ऊंचाइयों पर ले जाती है।

वाबी-साबी अपूर्णता में सुंदरता की तलाश

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहां 'परफेक्ट' दिखने का जुनून हम में से अधिकतर लोगों पर हावी है। जापानी दर्शन 'वाबी-साबी' इसके विपरीत बात कहता है। यह हमें सिखाता है कि कुछ भी स्थायी नहीं है और कुछ भी पूर्ण नहीं है। पुराने पत्थरों पर जमी काई या दरार पड़े मिट्टी के बर्तनों में भी एक इतिहास और सुंदरता होती है। यह दर्शन हमें अपनी कमियों को स्वीकार करना सिखाता है। जब हम अपनी 'अपूर्णता' को स्वीकार कर लेते हैं, तो अनावश्यक सामाजिक प्रदर्शन का अनावश्यक बोझ उतर जाता है।

किंतसुगी जख्मों का स्वर्ण श्रृंगार

जापान में जब कोई मिट्टी का बर्तन टूटता है, तो उसे फेंकने के बजाय सोने की परत से जोड़ा जाता है। इसे 'किंतसुगी' कहते हैं। यह हमें सिखाता है कि हमारे जीवन के घाव, असफलताएं और बुरे अनुभव हमें कमजोर नहीं, बल्कि और भी कीमती बनाते हैं। टूटने के बाद जब हम खुद को फिर से जोड़ते हैं, तो हम पहले से कहीं ज्यादा मजबूत, सुंदर और अद्वितीय होकर उभरते हैं।

शिनरिन-योकू प्रकृति की मौन चिकित्सा

जापानी लोग 'फॉरेस्ट बाथिंग' में विश्वास रखते हैं। इसका अर्थ है प्रकृति के माहौल को अपनी पांचों इंद्रियों से महसूस करना। मोबाइल, टीवी, लैपटॉप को छोड़कर नेचर के करीब समय बिताना एक कारगर चिकित्सा है। नेशनल ज्योग्राफिक के शोध के अनुसार, पेड़ों के बीच समय बिताने से तनाव का हार्मोन 'कोर्टिसोल' कम होता है और इम्यूनिटी बढ़ती है।

गमन धैर्य और गरिमा का संगम

जापानी दर्शन 'गमन' का अर्थ है प्रतिकूल परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना। चाहे सुनामी आए या व्यक्तिगत संकट, जापानी समाज विलाप करने के बजाय शांत रहकर पुनर्निर्माण में जुट जाता है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि सहनशीलता का अर्थ हार मानना नहीं, बल्कि कठिन समय में गरिमा के साथ अडिग रहना है।

इकिगाई सुबह जागने का ठोस कारण

जापान के ओकिनावा द्वीप को 'ब्लू जोन' कहा जाता है, जहां लोग 100 साल से अधिक जीते हैं। उनकी लंबी आयु का रहस्य है-इकिगाई के अनुसार जीना। इकिगाई का अर्थ है, जीवन जीने का उद्देश्य। यह चार स्तंभों पर टिका होता है। आप क्या पसंद करते हैं, आप किसमें कुशल हैं, दुनिया को इससे क्या मिलेगा और आपको किस काम के लिए पैसे मिल सकते हैं? फोर्ब्स के अनुसार, जिस दिन व्यक्ति को अपनी इकिगाई मिल जाती है, उसके जीवन से बोरियत, ऊब, तनाव और 'रिटायरमेंट' जैसे शब्द गायब हो जाते हैं, क्योंकि वह ऐसा काम कर रहा होता है जिससे उसे प्यार होता है।

जापानी दर्शन के ये सरल सिद्धांत अगर आप अपनाकर जीवन जीना सीख लें तो आपको जीवन में भरपूर खुशी और सुकून मिलेगा। *

सोलो एजिंग बढ़ती उम्र में जिंदगी का भरपूर मजा

अभी तक यही माना जाता रहा है कि सेवानिवृत्त और दायित्वों से मुक्त होने के बाद बुजुर्ग लोग अकेलेपन-उदासी भरी जिंदगी जीते हैं। लेकिन कई अध्ययनों से साबित हुआ है कि बुजुर्ग अब सोलो एजिंग को खूब एंज्वॉय करना सीख गए हैं। अब वे उदास नहीं हर पल को खुल कर जीते हैं।

{ लाइफस्टाइल
डॉ. मोनिका शर्मा }

एक ताजा अध्ययन में बुजुर्गों से जुड़ा यह निष्कर्ष सामने आया है कि उम्रदराज लोग अब शिकायतों के बजाय खुद को संभालने की राह चुन रहे हैं। स्टडी में शामिल अधिकतर वरिष्ठजनों ने बताया कि वे पांच साल से ज्यादा समय से अकेले रह रहे हैं। उम्र के इस पड़ाव पर जिंदगी को मैनेज करने में आने वाली परेशानियों को भूलकर उन्होंने अकेले रहना चुना है। सोलो एजिंग के इस सफर में अपने जीवन से खुश रहने वाले बुजुर्गों का आंकड़ा ज्यादा है। एजवेल फाउंडेशन की इस रिपोर्ट के मुताबिक हमारे देश में सोलो एजिंग का चलन तेजी से बढ़ रहा है। अकेले रहने वाले बुजुर्गों में 46.9 फीसदी सोलो एजर्स अपनी जिंदगी से खुश हैं, जबकि 41.5 प्रतिशत असंतुष्ट हैं। 10,000 बुजुर्गों को लेकर की गई यह स्टडी उम्रदराज लोगों के मन और जीवन का बदलता खाका हमारे सामने रखती है।

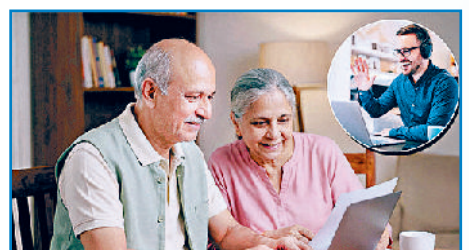

शिकायत नहीं एडजस्टमेंट की सोचः बच्चों के करियर के लिए विदेश या दूसरे शहरों में जाने के बाद अकेले रह रहे बुजुर्ग, दोषारोपण के बजाय अपनी देखभाल खुद ही करने की राह चुन रहे हैं। यह सच है कि संयुक्त परिवारों के टूटने से घर के बड़े सदस्यों में अकेलापन बढ़ा है पर वे अपने आप को बिजी रखना भी सीख रहे हैं। दूर रहने वाले बच्चों से जुड़े रहने के लिए गैजेट्स को यूज करना सीख रहे हैं। बुजुर्ग यह समझते हैं कि उनके बच्चे चाहकर भी हर समय उनके साथ नहीं रह सकते। यही वजह है कि इन हालातों में तनाव में घिरने के बजाय वे खुशी-खुशी जीवन से जूझने के रास्ते पर चलने लगे हैं। सोलो एजिंग का यह ट्रेंड बड़े-बुजुर्गों की बदलती लाइफस्टाइल से जुड़े इसी पहलू की तस्दीक करता है।

सक्रियता को प्राथमिकताः सुखद यह है कि सोलो एजिंग का ट्रेंड कोई थोपे जाने वाला चलन नहीं है। अकेले रहने वाले बुजुर्ग बहुत-सी परेशानियों का सामना करने के बावजूद खुद को सक्रिय रखने के फ्रंट पर जी-जान से जुटे रहते हैं। थकते कदमों के बावजूद अपनी जिम्मेदारियों का बोझ नहीं, बल्कि सक्रिय रहने का बहाना मानते हैं। अकेले सब कुछ मैनेज करने के दबाव को एक्टिव और सधी हुई जीवनशैली के रूप में देखने लगे हैं। इस उम्र में सेहत और सामाजिक जीवन से जुड़ी बहुत-सी उलझनों के बीच भी अपने मन को संभालने का जतन वे खुशी से कर रहे हैं। किसी भी तरह के व्यायाम, वॉकिंग, योग आदि के लिए समय निकालते हैं। एक्टिव एजिंग वाली जीवनशैली, उनको स्वस्थ रखने में भी अहम भूमिका निभाती है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक एक्टिव एजिंग, बुढ़ापे को एक प्रोडक्टिव और खुशनुमा अनुभव बनाने की स्ट्रेटजी है, न कि इसे अंत मानने की। मौजूदा दौर में बुजुर्ग इस खुशनुमा ट्रांसफॉरमेशन के लिए तकनीक की मदद भी ले रहे हैं। ऑनलाइन सुविधाओं से लेकर अपने बच्चों और रिश्तेदारों से जुड़े रहने तक, बुजुर्गों ने तकनीक के नए रंगों को सहजता से अपनाया है।

कर रहे आजादी का एहसासः असल में सोलो एजिंग के चलन से आत्मनिर्भर बनने का भाव भी जुड़ा है। अपनी जिंदगी को अपने अंदाज में जीने से आजादी का गहरा एहसास भी जुड़ा है। यही वजह है कि अकेलेपन और हेल्थ से जुड़ी बहुत-सी चुनौतियों के बावजूद बुजुर्गों का एक बड़ा वर्ग यानी 46.9 प्रतिशत बुजुर्ग इन हालातों को स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जीने के तौर पर भी देख रहा है। इसी एक पॉजिटिव सोच के चलते उम्रदराज लोग अकेले रहकर भी अपने जीवन से खुश हैं। इस स्टडी के मुताबिक 31 फीसदी से ज्यादा बुजुर्गों ने फाइनेंशियल और सोशल स्वतंत्रता के लिए अकेले रहने का विकल्प चुना है। वहीं 26.7 फीसदी का कहना है कि परिवार के युवा मेंबर्स के बाहर जाने से वे अकेले रह रहे हैं। नई पीढ़ी के दूर जाने को लेकर कोई शिकायत करने के बजाय बुजुर्ग इसे इंडिपेंडेंट रहने के अवसर की तरह देखने लगे हैं। शारीरिक रूप से नहीं भावनात्मक फ्रंट पर भी बुजुर्ग अब दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहते। उम्रदराज लोगों के लिए यह स्वतंत्रता उनके सुकून से भी जुड़ी है। *

{ व्यंग्य / राजा चौरसिया }

बने रहो पगला...

'बने रहो पगला, काम करे अगला' की रीति-नीति से प्रीति का रवैया आज सुपरहिट हो चुका है। आप ऐड़ा बनकर पेड़ा खाते रहेंगे और जो बुद्धिमान हैं, काम में खपते और मन ही मन कुढ़ते रहेंगे।

यह सेंट पर्सेंट पेटेंट सत्य है कि एकरसता से नीरसता ही उपजती है। पतझड़ के बाद ही वसंत वाली बहार की भरमार आती है। इसी प्रकार बीमार के लिए अनार परोसने के क्रिया-कलाप का प्रदर्शन अनिवार्य कार्य है। यदि उत्सव न होते तो ढेर सारी सुख- सुविधाओं के रहते हुए भी खुशी के अभाव में नदी किनारे घोंघा प्यासा की कहावत ही चरितार्थ होती रहती। जैसे रात के बाद ही प्रभात आता है, अमावस्या के उपरांत ही पूर्णिमा होती है। इसी प्रकार मूर्खता के पश्चात ही विद्वता का अवतरण होता है। कीचड़ के बिना कमल की कल्पना, धुएं के बादलों से बरसात की सरासर झूठी कल्पना सरीखी है। हार्ट को रुचने वाले शॉर्ट और स्मार्ट शब्दों में यह डंके की चोट पर कहा जा सकता है कि मूर्खता या मूढ़ता ही विद्वता की मातेश्वरी होती है। हाथी के दांत के आचरण वाले उदाहरण हवा-पानी की तरह यत्र-तत्र, सर्वत्र व्याप्त हैं। इसकी महत्ता को समझते हुए ही कुछ चतुर चालाक लोग बुद्धिमान होते हुए भी मूढ़ बने रहते हैं। इसीलिए संयोग नहीं बल्कि दुर्योग है कि असली और फसली मूर्खों से ज्यादा नकली मूर्खों की तादाद बेमियाद बढ़-चढ़ रही है। अत्याधुनिकता की मानसिकता एवं प्रासंगिकता को प्राथमिकता देने से नकली मूर्खों या धूर्तों की बाढ़ खासी प्रगति पर है। झूठे शुभचिंतकों तथा सच्चे अशुभचिंतकों के इस काबिलेगौर दौर में चातुर्य का प्राचुर्य रहते हुए भी दूसरों के सामने मूर्ख, बुद्धू, घुग्घू और उल्लू बने रहने के कायदे से फायदे ही फायदे हैं। मन से थू-थू करते हुए भी मुंह से आई लव यू कहना अवसरवाद का बढ़िया अपडेट सर्टिफिकेट है। मीठे गवाक्ष से तीखे कटाक्ष करने का बेहतरीन एवं हसीन आइडिया है। बुद्धिजीवी को मित्र बनाना मूर्खता है, लेकिन किसी मूर्ख को बुद्धिमान होने का आभास कराना सबसे कारगर बुद्धिजीविता है। 'बने रहो पगला, काम करे अगला' की रीति-नीति से प्रीति का रवैया आज सुपरहिट हो चुका है। घर, दफ्तर हो या आस-पड़ोस सरल से सरल काम भी न कर पाने का प्रमाण दिखाकर आपको मूर्ख घोषित कर दिया जाएगा तो आगे कभी कोई काम करने की जिम्मेदारी आपको नहीं मिलेगी। आप ऐड़ा बनकर पेड़ा खाते रहेंगे और जो बुद्धिमान हैं, काम में खपते और मन ही मन कुढ़ते रहेंगे। मूर्ख न होकर भी मूर्ख बने रहने से ही दांपत्य जीवन की कुशलता विशेष तो नहीं, मगर शेष बची ही रहती है। जान-बूझकर उल्लू यानी गृहलक्ष्मी के वाहन बने रहने से गृहस्थी की गाड़ी सरपट दौड़ती रहती है। ज्वालामुखी को चंद्रमुखी अर्थात् लालमिर्ची को मिश्री कहने का यह नीक-सलीका भरपूर स्वागतेय है। विद्वता झाड़ते हुए तर्क, वितर्क और कुतर्क से बेकार का भेजा भंजन ही होता है, जबकि जन्म से ही मूर्ख पैदा हुए उच्च पदासीन मंत्री या अफसर को इंटेलीजेंट, ब्रिलिएंट तथा डिलीजेंट होने का आभास कराते रहने से अपना उल्लू सीधा होता रहता है। जनता का सेवक बनकर महानुभाव कितनी मलाई खाते हैं, यह सेवा करवाने वाली जनता खूब जानती और समझती है। दरअसल, जनतंत्र में तो जनता मूर्ख न होकर भी मूर्ख बनती ही रहती है। उसके लिए कोई खास दिन नहीं, हर दिवस सहर्ष मूर्ख दिवस ही होता है। मूर्ख दिवस वास्तव में उन लोगों का ही उत्सव है, जो दीन, हीन और खुद को मूर्ख बताकर दूसरों को मूर्ख बनाते हैं, अपना काम निकलवाते हैं। *

विज्ञापन...
इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार
नोट :- वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में।
सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आइये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ–

केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है ?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?
यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। NBC@

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली
देहली हॉस्पिटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय : दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466 | www.nonsurgicalspinecentre.in

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

मेरे लिखने की मेज

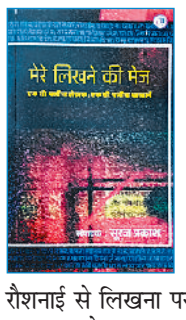

हाल में वरिष्ठ साहित्यकार सूरज प्रकाश के संपादन में 'मेरे लिखने की मेज' पुस्तक छपकर आई है। इसमें नई और वरिष्ठ पीढ़ी के कुल मिलाकर 125 लेखकों की उनके लेखन से जुड़ी दास्तानें दर्ज हैं। यह किताब पढ़कर लेखन प्रक्रिया को अलग-अलग दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है। कोई रचना लिखने की शुरुआत कैसे होती है, उसके लिए अनुकूल स्थिति या वस्तुएं क्या होती हैं, लिखने के पहले और उसके बाद किस तरह का अनुभव होता है, कौन से कारण लिखने के लिए किसी लेखक को विवश करते हैं? ऐसे तमाम सवालों के जवाब किताब में शामिल लेखकों ने दिए हैं। वरिष्ठ लेखक असगर वजाहत अपने लेखन के बारे में कहते हैं, 'सफेद कागज पर काली रौशनाई से लिखना पसंद करता हूं। सफेद को काला करने का जुनून सा उठता रहता है। सफेद कागज मुझे बेचैन कर देता है।' अपने लेखन के बारे में आकांक्षा पारे कहती हैं, 'मुझे रात की जरूरत होती है, जब मुझे पता है, कोई फोन नहीं करेगा, दरवाजे की कोई घंटी नहीं बजेगी।' वरिष्ठ कथाकार प्रकाश मनु लेखन को पूजा-अर्चना की तरह पवित्र कर्म मानते हैं। वह कहते हैं, 'अपने कमरे के जिस कोने में बैठकर मैं लिखता-पढ़ता हूं, वहां गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों नदियां बहती हैं। इसलिए उससे पवित्र स्थान तो कोई और हो ही नहीं सकता।' वरिष्ठ कवि लीलाधर मंडलोई अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में कहते हैं, 'लिखते वक्त अपने संगतकारों यानी डायरी, कागज, पेन और लिखने की आधार जगह से संगत बनाता हूं... और मैं आगत रचना के सामने विनत भाव से बैठ जाता हूं।'

भले ही यह किताब किस्से, कहानी या कविता की नहीं है लेकिन इसे पढ़ने के दौरान रोचक कहानियों के पढ़ने जैसा ही आनंद आता है। *

पुस्तकः मेरे लिखने की मेज, संपादकः सूरज प्रकाश, मूल्यः 449 रुपए, प्रकाशकः अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली

रोचक
अंजू जैन

अप्रैल फूल-डे स्पेशल

फर्स्ट अप्रैल यानी अप्रैल फूल डे पर लोग एक-दूसरे के साथ प्रैंक कर खूब एंज्वॉय करते हैं। अतीत में इस मौके पर कुछ मशहूर कंपनियों, टेलीविजन और रेडियो स्टेशंस ने ऐसे प्रैंक्स किए, जिसकी पूरी दुनिया में चर्चा हुई। यहां ऐसे ही कुछ चर्चित अप्रैल फूल प्रैंक्स के बारे में बता रहे हैं।

दुनिया भर में मशहूर हुईं ये मजेदार शरारतें

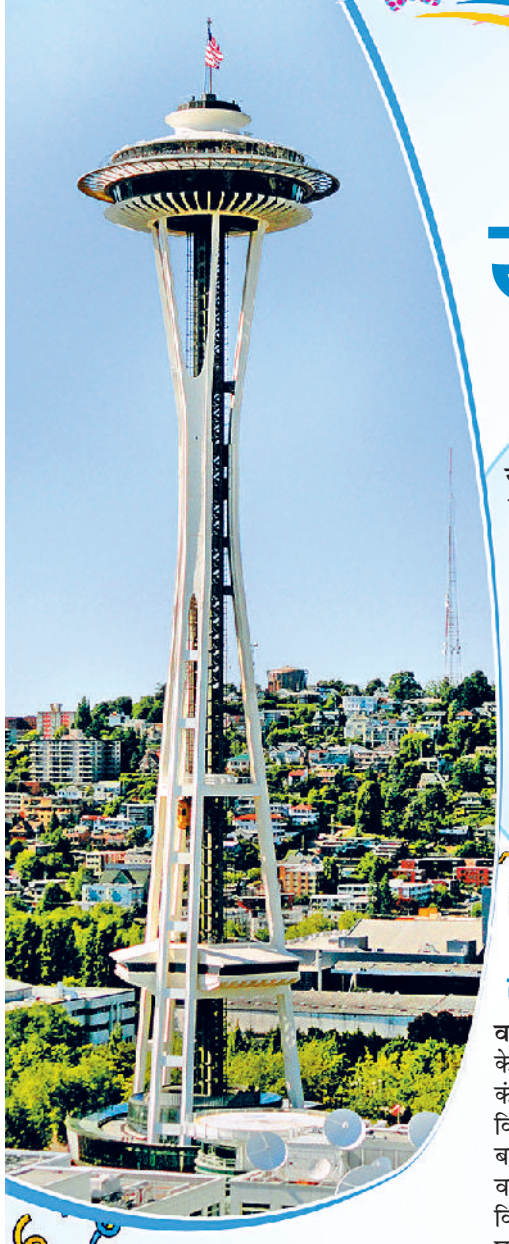

स्पेस नीडल गिरने की खबर

यह प्रैंक 1 अप्रैल 1989 को शाम के समय टीवी पर प्रसारित किया गया था। सिएटल के एक स्थानीय स्केच कॉमेडी शो, 'ऑलमोस्ट लाइव!' ने किंग टीवी पर एक विशेष रिपोर्ट प्रसारित की थी। रिपोर्ट में गंभीरता से दावा किया गया कि शाम 6:53 पर वाशिंगटन के सिएटल में स्थित स्पेस नीडल गिर गई है। शो ने टॉवर के गिरने की फर्जी तस्वीरें और चश्मदीदों के झूठे इंटरव्यू भी दिखाए। यह प्रैंक इतना विश्वसनीय लगा कि पूरे सिएटल में दहशत फैल गई। लोगों ने घबराहट में इमरजेंसी सेवाओं पर इतने फोन किए कि लाइनें ठप हो गईं। यहां तक कि टॉवर के आस-पास रहने वाले लोग भागने लगे। स्थिति बिगड़ने के बाद, चैनल को तुरंत स्पष्ट करना पड़ा कि यह सिर्फ एक मजाक था। बाद में, शो के निर्माताओं और चैनल को इस प्रैंक के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी पड़ी थी। *

टूथपेस्ट से बर्गर की स्मेल

साल 2017 में फास्ट-फूड चेन बर्गर किंग ने दावा किया कि उन्होंने एक ऐसा टूथपेस्ट बनाया है, जिसमें एक्टिव हॉपर अर्क है, इसके कारण आपके मुंह से हमेशा बर्गर की खुशबू आएगी। लोग ब्रश करने के बाद भी अपने पसंदीदा बर्गर के स्वाद का आनंद ले सकेंगे। विज्ञापन में बताया गया कि इसमें 'व्हाइटनिंग अनियन' (सफेद करने वाले प्याज), 'डेली फ्रेश टोमैटो' (ताजा टमाटर) और एंटी-कैविटी स्टेक (कैविटी रोकने वाला मांस) जैसी चीजें शामिल हैं। इस प्रैंक को असली दिखाने के लिए बर्गर किंग फ्रांस और विज्ञापन एजेंसी बजमैन ने एक 60 सेकेंड का कमर्शियल वीडियो भी जारी किया था। यह प्रैंक मार्च के अंत में (29-31 मार्च) शुरू किया गया था ताकि 1 अप्रैल तक लोगों को भ्रमित किया जा सके। यह केवल एक मजेदार विज्ञापन अभियान था और बर्गर किंग ने कभी-भी ऐसा कोई टूथपेस्ट बाजार में नहीं बेचा। *

लेफ्ट-हैंडेड बर्गर

वर्ष 1998 में एक अप्रैल के आस-पास बर्गर किंग कंपनी ने अखबारों में विज्ञापन दिया कि उन्होंने बाएं हाथ से काम करने वाले लोगों के लिए एक विशेष बर्गर बनाया है, जिसमें सभी मसाले 180 डिग्री घुमाकर रखे गए हैं। यह सुनकर हजारों लोग इसे ऑर्डर करने लगे। बाद में पता चला कि यह प्रैंक था। *

हूटर्स वेट्रेस और योडा

वर्ष 2001 में घटित हुई एक घटना, जो एक मजाक के रूप में शुरू हुई थी, लेकिन बाद में यह कानूनी लड़ाई में बदल गई थी। इसे 'टॉय योडा' केस के रूप में जाना जाता है। हुआ यह कि अप्रैल 2001 में, पनामा सिटी बीच, फ्लोरिडा के हूटर्स रेस्तरां के मैनेजर ने अपनी वेट्रेसेस के बीच बीयर बेचने की एक प्रतियोगिता रखी। मैनेजर ने वादा किया कि जो सबसे ज्यादा बीयर बेचेगी, उसे इनाम में एक नई टोयोटा (कार) दी जाएगी। जोडी बेरी नाम की वेट्रेस ने सबसे ज्यादा बिक्री की और प्रतियोगिता जीत ली। जब इनाम देने का वक्त आया, तो मैनेजर ने जोडी की आंखों पर पट्टी बांधी और उसे पार्किंग लॉट में ले गया। लेकिन वहां कोई कार नहीं थी। इसके बजाय उसे 'स्टार वार्स' फिल्म के पात्र योडा का एक खिलौना थमा दिया गया। जोडी को यह मजाक बिल्कुल पसंद नहीं आया। उसने नौकरी छोड़ दी। यही नहीं रेस्तरां पर धोखाधड़ी और अनुबंध तोड़ने का मुकदमा भी दायर कर दिया। *

स्क्रीन में सुगंध

साल 2013 में गूगल ने अपने एक नए फीचर 'गूगल नोज' के जरिए दावा किया था कि अब लोग सर्च इंजन के माध्यम से चीजों को सूंघ भी सकेंगे। दावा किया गया कि उनके पास 15 मिलियन से अधिक सुगंधों का डेटाबेस है। गूगल यूजर्स को इसका अनुभव लेने के लिए कहा गया कि वे सर्च बार में जाकर कुछ सर्च करें और फिर अपने डिवाइस की स्क्रीन के करीब जाकर सूंघें। इसमें 'नई कार की महक', 'गीले कुत्ते की महक' और यहां तक कि 'मिस्र के मकबरे' जैसी अजीबो-गरीब चीजों को सूंघने का विकल्प दिया गया था। लेकिन इसे टेस्ट करने के लिए जब लोग स्क्रीन सूंघने की कोशिश करते और कुछ महसूस नहीं होता, तो अंत में एक संदेश आता कि यह अप्रैल फूल प्रैंक था। *

पर्यटन स्थल
समीर चौधरी

स्पीति घाटी हिमाचल प्रदेश का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। लेकिन अगर आप यहां स्वच्छ, मनोरम वादियों के बीच आध्यात्मिक शांति का अनुभव लेना चाहते हैं तो 'की गोंपा' यानी 'की मठ' जरूर जाना चाहिए। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

स्वर्ग जैसी अनुभूति देता है स्पीति घाटी का 'की मठ'

हिमाचल प्रदेश के स्पीति में काजा से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'की मठ' की सैर के दौरान आपको एहसास होगा कि जैसे स्वर्ग पृथ्वी पर उतर आया है। हालांकि अपने देश और हिमाचल प्रदेश के अन्य पर्वतीय पर्यटन स्थलों की तुलना में यहां पर्यटकों की आवक कम होती है।

सबसे पुराना-बड़ा मठः लगभग 13,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित 'की मठ' स्पीति घाटी में सबसे पुराना और सबसे बड़ा मठ है। पहाड़ के ऊपर स्थित यह मठ कई मंजिला है, जिसकी तुलना अकसर लेह के निकट स्थित आइकॉनिक थिकसे मठ से की जाती है। अपने ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के अतिरिक्त 'की गोंपा' अपनी सुंदर संरचना और शांत वातावरण के लिए भी विख्यात है।

निर्माण और नवीनीकरणः की गोंपा का निर्माण 11वीं सदी के आस-पास माना जाता है। इस मठ का गहरा संबंध बौद्ध संत लोचेन रिनचेन जंगपो के पूजनीय अवतारों से है, जो 958 से 1055 ईस्वी के बीच हुए थे। इसकी गहरी जड़ें प्राचीन कदंपा विरासत से भी जुड़ी हैं और इसे लोचेन तुलकुस विरासत की पीठ माना जाता है। इस विरासत के माध्यम से 'की मठ' 11वीं शताब्दी के विख्यात बौद्ध विद्वान और संत अतिशा दिपांकर से भी जुड़ जाता है।

इस मठ का पुनर्निर्माण 15वीं शताब्दी के शुरू में शेरपा जंगपो ने करवाया, जो गेलुग्पा समुदाय के संस्थापक जे त्सोंगखापा के शिष्य थे। पांचवें दलाई लामा के युग में यानी 17वीं शताब्दी में इस मठ पर मंगोलों ने हमला किया, जिसके बाद यह औपचारिक रूप से गेलुग्पा स्कूल (प्रमुख तिब्बती बौद्ध संप्रदाय) का हिस्सा बन गया। फिर 1820 के लद्दाख-कुल्लू टकराव के दौरान भी इसे नुकसान पहुंचा। 1841 में डोगरा सेना और सिख सेना ने इसे काफी नुकसान पहुंचाया। 1840 के दशक में इसमें भयंकर आग भी लगी थी। 1975 में आए भूकंप की वजह से भी इस मठ को काफी नुकसान पहुंचा था। तब आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया और स्टेट पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट ने इसकी मरम्मत कराई थी।

बहुत कुछ है दर्शनीयः 'की मठ' की बाहरी सुंदरता तो मनोरम और स्वार्गिक अनुभूति देने वाली है ही, मठ के भीतर भी बहुत कुछ ऐसा है, जो दर्शनीय है।

साल 2000 में 14वें दलाई लामा ने इस मठ में एक नए विशाल असेंबली हॉल का उद्घाटन किया था। इस हॉल की दीवारों पर कुछ बहुत ही सुंदर प्राचीन पेंटिंग्स लटकी हुई हैं, जो बुद्ध के पिछले जन्मों की कहानियों को व्यक्त करती हैं। मुख्य असेंबली हॉल के सामने पूजा करने का कमरा है, जिसमें एक विशाल पूजा चक्र है। इसके अलावा पद्मसंभव और अमितायुस की प्रतिमाएं भी हैं। 'की मठ' अपनी वॉल हैंगिंग्स और ऐतिहासिक कलाकृतियों के लिए विख्यात है। मठ के टॉप फ्लोर पर जो अपार्टमेंट है, वह दलाई लामा के लिए आरक्षित है। निचले माले पर मठ की रक्षा करने वाले देवताओं को समर्पित एक मंदिर है, जबकि उसके नीचे जो एक अन्य असेंबली हॉल है, उसे छोटे आयोजनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यहां दुर्लभ धर्मग्रंथ, पुरानी वॉल पेंटिंग्स और भविष्य के बुद्ध मैत्रेय की मूर्ति भी है।

यात्रा का उपयुक्त समयः 'की मठ' की यात्रा के लिए आदर्श समय मई से अक्टूबर के बीच का है, जब यहां हल्की-सुहानी ठंड पड़ रही होती है। सड़कें खुली होती हैं और स्पीति वादी की सुंदरता अपने शबाब पर होती है। इस दौरान यहां का तापमान आमतौर से 10 डिग्री सेंटीग्रेड से 25 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच में होता है।

ठंड के मौसम में तो यहां तापमान माइनस 20 डिग्री सेंटीग्रेड तक गिर जाता है। भारी बर्फबारी के कारण सड़कें बंद हो जाती हैं। हालांकि मठ तो खुला रहता है, लेकिन उस तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है।

जो पर्यटक सांस्कृतिक अनुभव लेने की इच्छा रखते हैं, उन्हें अपनी यात्रा की योजना जुलाई में बनानी चाहिए, जब यहां चाम उत्सव का आयोजन किया जाता है। इस उत्सव में बौद्ध भिक्षु परंपरागत मुखौटा नृत्य करते हैं। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक रूप में किया जाता है। *

मौसम में गर्माहट घुलने के साथ ही युवाओं का फैशन और ड्रेसिंग स्टाइल बदलने लगा है। बदलते हुए फैशन ट्रेंड को देखकर लगता है कि इन गर्मियों में जेंडर न्यूट्रल फैशन का क्रेज रहेगा। यंगस्टर्स को यह फैशन ट्रेंड क्यों इतना भा रहा है?

इन गर्मियों में रहेगा जेंडर न्यूट्रल फैशन का क्रेज

ट्रेंड
प्रतिमा अरोड़ा

मार्च की शुरुआत के साथ ही हल्की गर्माहट जैसे वातावरण में फैली तो कॉलेज परिसरों, कैफे और शहर की सड़कों पर एक नया फैशन ट्रेंड दिखाई पड़ने लगा। यह है जेंडर न्यूट्रल फैशन। वास्तव में यह केवल ड्रेस का बदलाव नहीं, बल्कि सोच और पहचान का बदलाव भी है। अब फैशन यह नहीं पूछता कि आप मेल हैं या फीमेल। अब फैशन यह जानना चाहता है कि आप कौन हैं? भारत के युवा विशेषकर जेन-जी और नए प्रोफेशनल्स अब ऐसी ड्रेसेस चुन रहे हैं, जो आरामदायक हों, अभिव्यक्ति के अनुकूल हों और किसी जेंडर विशेष की सीमाओं में न बंधते हों।

बदल रही है फैशन की परिभाषा

लंबे समय तक फैशन की दुनिया स्त्री और पुरुषों के दो अलग-अलग खांचों में बंटी रही है। लेकिन हाल के सालों में फैशन के बीच जेंडर की यह दूरी धीरे-धीरे धुंधली होने लगी है। आज के युवा मानते हैं, ड्रेस शरीर के लिए होती है, किसी जेंडर विशेष के लिए नहीं। दिल्ली, मुंबई, पुणे और बैंग्लुरु के कॉलेजों में यह अब आम दृश्य है कि एक ही तरह के ओवर साइज शर्ट लड़कियां भी पहनती हैं और लड़के भी। वैसे ही ढीले ट्राउजर भी दोनों पहनते खूब दिखते हैं। जेंडर न्यूट्रल फैशन अब सिर्फ बड़े शहरों और सेलिब्रिटी क्लास की ही सोच नहीं दर्शाता बल्कि यह अवधारणा छोटे शहरों से लेकर मझोले शहरों और कस्बों तक में फैल रही है।

गर्मियों के लिए है उपयुक्त

जेंडर न्यूट्रल फैशन, किसी और मौसम में चाहे दोनों के लिए उपयुक्त न हो, लेकिन गर्मी के मौसम में यह ब्वॉयज और गर्ल्स दोनों के लिए आरामदायक फैशन माना जाता है। लूज ड्रेसेस, शरीर को जहां पसीने की परेशानी से दूर रखती हैं, वहीं लिनेन और कॉटन जैसे नेचुरल फैब्रिक, त्वचा के अनुकूल होते हैं। यही कारण है कि इन गर्मियों में लिनेन की शर्ट, कॉटन कुर्ते और ढीले ट्राउजर खूब लोकप्रिय होने जा रहे हैं।

ये कलर्स रहेंगे पॉपुलर

जेंडर न्यूट्रल फैशन की पहचान केवल डिजाइन या फैब्रिक से नहीं, रंगों से भी होती है। आने वाले दिनों में ब्राइट कलर्स की जगह, बेज, व्हाइट, ग्रे, ऑलिव ग्रीन और लाइट ब्लू जैसे प्लीजेंट कलर्स का बोलबाला रहने वाला है। क्योंकि ये कलर्स हमारी आंखों के साथ-साथ त्वचा और पूरे शरीर को गर्मी से राहत देते हैं। इन कलर्स की ड्रेसेस मेल-फीमेल सभी पर सूट करते हैं।

सोशल मीडिया का रोल

जेंडर न्यूट्रल फैशन की ओर झुकाव की एक बड़ी वजह सोशल मीडिया भी है। इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और पिंटरेस्ट जैसे सोशल साइट्स पर हजारों युवा इन दिनों फैशन कंटेंट खूब बना रहे हैं, जो जेंडर की सीमाओं को तोड़ते हैं। अब फैशन डिजाइनर ही फैशन ट्रेंड तय नहीं करते बल्कि कॉलेज के युवा, यंग प्रोफेशनल्स और कंटेंट क्रिएटर्स भी फैशन के नए ट्रेंड सेट कर रहे हैं। एक सिंपल ओवर साइज शर्ट और लूज ट्राउजर में बनी इंस्टाग्राम की वायरल रील भी लाखों युवाओं को यह फैशन अपनाने के लिए प्रेरित कर सकती है।

कंफर्ट-स्टाइल से कहीं बढ़कर

जेंडर न्यूट्रल फैशन, केवल कंफर्ट या स्टाइल का मामला नहीं है। इसे आत्मविश्वास और स्वतंत्र सोच से भी जोड़कर देखा जाता है। यह फैशन स्टाइल युवाओं को यह संदेश देता है कि वे अपनी पहचान स्वयं तय कर सकते हैं। आज के युवा फैशन को पारंपरागत ड्रेस पहनने के नियम का पालन करने के लिए नहीं, बल्कि अपनी सोच, पसंद और स्वतंत्रता को व्यक्त करने के लिए अपना रहे हैं। यही कारण है कि जेंडर न्यूट्रल फैशन, तेजी से युवाओं की पसंद बनता जा रहा है।

बदल रही फैशन इंडस्ट्री

यंगस्टर्स की पसंद को देखते हुए, देश के प्रमुख फैशन ब्रांड्स में भी अब जेंडर न्यूट्रल यूनिसेक्स कलेक्शन की बड़ी रेंज दिखती है। कई नए स्टार्टअप्स जेंडर-न्यूट्रल ड्रेसेस पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इससे यह स्पष्ट है कि फैशन उद्योग भी अब जेंडर न्यूट्रल जैसे बदलाव को स्वीकार कर चुका है। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में फैशन में मैन और वुमेन की बजाय ऑल या यूनिसेक्स जैसे सेक्शन हुआ करेंगे।

कह सकते हैं कि इस साल की गर्मियां अभी से यह स्पष्ट संकेत दे रही हैं कि फैशन अब जेंडर की सीमाओं से मुक्त हो रहा है। जेंडर न्यूट्रल फैशन न्यू एज फैशन का पसंदीदा ट्रेंड बनकर उभर रहा है। *

सिने ट्रेंड
अशोक वाधवाणी

दर्शकों को खूब आती हैं पसंद हॉरर-कॉमेडी कॉम्बो फिल्में

हालांकि शुरुआती दौर से ही बॉलीवुड में हॉरर फिल्में बनती रही हैं। लेकिन बीते कुछ वर्षों से हॉरर फिल्मों में कॉमेडी का कॉम्बो दर्शकों को काफी पसंद आ रहा है। यही वजह है कि ऐसी फिल्में लगातार बन रही हैं और दर्शकों को पसंद भी आ रही हैं। ऐसी ही कुछ हॉरर-कॉमेडी फिल्मों पर एक नजर।

बीते कई वर्षों से हिंदी फिल्मों में हॉरर, थ्रिलर के साथ कॉमेडी वाला तड़का दर्शकों को खूब अट्रैक्ट कर रहा है। रहस्य-रोमांच और साफ-सुथरी कॉमेडी पसंद करने वाले दर्शक इसे सपरिवार देख सकते हैं, क्योंकि इस तरह की फिल्मों में हॉरर और कॉमेडी का कॉम्बो देखने को मिल जाता है। यह इसका प्लस प्वाइंट है।

हॉरर-थ्रिलर-कॉमेडी का कॉकटेलः कुछ वर्षों से हॉरर कॉमेडी जॉनर की फिल्मों का दौर चल पड़ा है। ऐसी मूवी में ह्यूमर और हॉरर का कॉकटेल नजर आता है। अजय देवगन की 'गोलमाल अगेन' (2017) में हॉरर और कॉमेडी के साथ-साथ इमोशनल टच भी देखने को मिला। इसी थीम पर बेस्ड 'गो गोवा गॉन' (2013) फिल्म ने भी दर्शकों को बांधे रखा। यह गोवा में फिल्माई गई हॉरर, थ्रिलर और जॉम्बिज एक्शन वाली कॉमेडी मूवी है। वर्ष 2025 में रिलीज हुई 'थाम्मा' में आयुष्मान खुराना ने बेताल (पिशाच) की भूमिका निभाई। इसी फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने मनुष्यों का खून चूसने वाले खतरनाक विलेन का रोल निभाया। वर्ष 2024 में रिलीज्ड 'मुंज्या' भी एक कॉमेडी हॉरर फिल्म है। कोई बड़ा स्टार नहीं होने के बावजूद इस फिल्म ने दर्शकों के दिलों में जगह बनाई। इससे काफी पहले अमिताभ बच्चन की 'भूतनाथ' (2008) और 'भूतनाथ रिटर्न्स' (2014) भी सुपरनेचुरल कॉमेडी ड्रामा फिल्में थीं। इन दोनों ही फिल्मों की कहानी में नयापन था, ताजगी थी। साथ ही कलाकारों के जानदार अभिनय और कमाल के पिक्चराइजेशन ने दर्शकों को बांधे रखा। इसीलिए ये फिल्में सफल रहीं।

'स्त्री' ने कर दिखाया कमालः साल 2018 में आई हॉरर-कॉमेडी फिल्म 'स्त्री' की सफलता ने इस ट्रेंड को सेट करने में बड़ा रोल निभाया। राजकुमार राव, श्रद्धा कपूर, पंकज त्रिपाठी जैसे कलाकारों के अभिनय से सजी इस फिल्म में हर घर के सामने लिखी लाइन 'ओ स्त्री, कल आना!' दर्शकों के दिलोदिमाग में घर कर गई। इस फिल्म के कई दृश्य दर्शकों के मन में आज भी तरोताजा हैं। 'स्त्री' की सफलता के बाद से इस तरह की फिल्मों का ट्रेंड-सा चल पड़ा। 2024 में आई 'स्त्री-2' भी दर्शकों की कसौटी पर खरी उतरी, इस फिल्म को भी बड़ी सफलता मिली।

इस साल आएगी 'भूत बंगला'ः इस साल हॉरर-कॉमेडी जॉनर में अक्षय कुमार की 'भूत बंगला' रिलीज होने वाली है। फिल्म के निर्देशक है प्रियदर्शन। ये वही प्रियदर्शन हैं, जिन्होंने साइकोलॉजिकल थ्रिलर 'भूल-भुलैया' बनाकर कैरेक्टर मोंजूलिका (विद्या बालन) को फेमस किया था। वैसे आपको बता दें कि कई दशक पहले साल 1965 में महमूद ने ब्लैक एंड व्हाइट 'भूत बंगला' बनाई थी, जिसमें हॉरर, थ्रिलर और कॉमेडी का मनोरंजक मेल था। उस दौर में ये अपनी तरह की नई पहल थी। उसे इस जॉनर की पहली फिल्म भी माना जाता है।

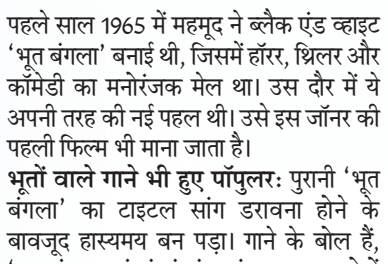

भूतों वाले गाने भी हुए पॉपुलरः पुरानी 'भूत बंगला' का टाइटल सांग डरावना होने के बावजूद हास्यमय बन पड़ा। गाने के बोल हैं, 'भूत बंगला, हां हां हां हां कहां आ गए हम दोनों।' इस गाने में महमूद और आर. डी. बर्मन के साथ भूतों को नाचते दिखाया गया है। महमूद, आर. डी. बर्मन और सुदेश की डरावनी आवाजें डराती कम, हंसाती-गुदगुदाती ज्यादा हैं। आने वाली 'भूत बंगला' में भी ऐसे ही एक गाने के बोल हैं, 'रामजी आकर सबका भला करेंगे।' इसमें अक्षय कुमार अजीबो-गरीब वेशभूषा में अजीब, अटपटी हरकतें करते हुए, भूतों के साथ नाचते-गाते दिखते हैं। दर्शकों के मन में सस्पेंस जगाने, डराने के लिए स्पेशल इफेक्ट का सहारा भी लिया गया है। यह कोई नया चलन नहीं है। ऐसे गीतों का सिलसिला काफी पहले से शुरू हो चुका है। फिल्म 'चाचा-भतीजा' (1977) में हेमा मालिनी और सोनिया साहनी पर फिल्माया गया गीत, 'भूत राजा बाहर आ जा। सीधी तरह से मान जा नहीं तो बजा दूंगी तेरा बैंड बाजा।' इसमें उनके साथ धर्मेंद्र और रणधीर कपूर भी हैं। आगे चलकर ऐसा ही गाना 'चालबाज' (1989) में श्रीदेवी और रजनीकांत पर पिक्चराइज किया गया। गाने के बोल थे, 'ओ भूत राजा फंस गई मुश्किल में, भूतों की महफिल में।' कविता कृष्णमूर्ती, सुदेश भोसले की आवाज में यह गाना मनोरंजक है। 'हाउसफुल-4' का 'द भूत सॉन्ग।' अलग-थलग अंदाज वाले गाने का रिमिक्स वर्जन है। मिका सिंह, फरहाद द्वारा गाए इस रैपनुमा गाने में बड़े, खर्चीले सेट और कई स्टार दिखाए गए हैं। इस दिलचस्प गाने को देखते-सुनते समय डर तो नहीं लगता, हां मजा जरूर आता है। इसीलिए यह गाना काफी हिट भी रहा।

हॉरर-कॉमेडी फिल्मों का फंडाः हॉरर फिल्मों में दिल दहला देने वाले दृश्य देखकर दर्शक कई बार अचंभित-भयभीत होते हैं। डर के मारे रोमांचित भी होते हैं। उसी समय उनका ध्यान कंवर्ट करने के लिए कॉमेडी सींस दिखाए जाते हैं। इससे वे भयमुक्त होकर हंसने लगते हैं। यही वजह है कि हॉरर, थ्रिलर, कॉमेडी का कॉम्बिनेशन दर्शकों को लुभा रहा है। इसी कारण धड़ल्ले से इनकी फ्रेंचाइजी फिल्में भी बन रही हैं। जैसे- 'भूल-भुलैया', 'स्त्री', 'भेड़िया', 'मुंज्या' आदि। *